चर्तुथ अध्याय

मोहन राकेश की कहानियों में आधुनिकता

आजादी के बाद भारतीय जन-मानस को भीतरी और बाहरी रूप से अनेक परिवर्तनों ने आंदोलित कर दिया । राजनीति की दिशाहीनता ने चारों ओर अव्यवस्था एवं भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया । सामाजिक क्षेत्र में पुराने आदर्शों एवं जीवन-मूल्यों के टूटने और नये मूल्यों को पूर्णत: स्वीकार न करने की असमर्थता ने नयी पीढ़ी को मानसिक कुंठाओं का शिकार बनाया । आर्थिक विषमता ने नारी को नौकरी के लिए विवश कर दिया । परिणामत: पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव एवं विचित्र मानसिकता को जन्म दिया । धार्मिक विश्वास एवं आस्थाएँ व्यक्ति के नैतिक अपराधों पर आवरण डालने वाली रह गयी । इस धुरीहीन एवं विशृंखले परिवेश में जीने वाला मनुष्य आज प्राय: समझौतावादी दृष्टिकोण अपनाकर जीवन घसीटता चला जा रहा है । आज इसी स्थिति को आधुनिक साहित्य अभिव्यक्ति प्रदान करने की चेष्टा कर रहा है ।

आधुनिक हिंदी साहित्य में मोहन राकेश समष्टि बोध के कहानीकार हैं, किंतु उनकी कहानियों के आधार सनातन सामाजिक शक्तियाँ हैं जिनका मूल केन्द्र व्यक्ति है । आपकी कहानियाँ एक व्यक्ति की न होकर पूरे समाज की हैं । सामाजिक, राजनीतिक और सांप्रदायिक आदि अनेक पहलूओं को लेकर आपने कहानियाँ लिखी । आपने नये के मोह में आकर कुछ नये प्रयोग भी किए ।

विभिन्न मानसिक स्थितियों को पकड़ने की कोशिश इन कहानियों में की गयी है । आधुनिक जीवन की विभिन्न परिस्थितियों और परिवेश में स्थित व्यक्ति को आपने इन कहानियों में दिखाया है । राकेश अपनी कहानियों के प्रारंभ और अंत के प्रति बड़े सजग हैं, वे उन्हें नाटकीय बनाने में कामयाब रहे हैं । प्रवाहमयी भाषा, अद्भुत अभिव्यक्ति कौशल, भावुकता और आदर्शवादिता ये तो आपकी कहानियों के साज हैं ।

रचनाकार के रूप में हिंदी साहित्य में पहला कदम कहानीकार के रूप में मोहन राकेश जी ने रखा । साफ-सुथरी भाषा में लिखने के कारण उन्होंने आरंभ में ही हिन्दी पाठकों का ध्यान आकर्षित कर लिया । राकेश ने ही कहानियों, उपन्यासों एवं नाटकों में आधुनिक संवेदना एवं व्यक्ति के अस्तित्व की समस्याओं को उठाया । वे एक ओर सीधी-सपाट सरल और पठनीय कहानियाँ लिखते थे तो दूसरी ओर ऐसी कहानियाँ भी जो पठनीयता की दृष्टि से दुरुह हैं । वे ज्यादातर आधुनिक युवा पीढ़ी की मन:स्थिति और परिस्थिति को लेकर कहानियाँ लिखते थे । इसलिए कहानी के अन्दर उनकी नवीन विचार-पध्दति, भाषा, मुहावरा, शिल्प, संकेत, एवं संश्लिष्ट विचार आदि मिलते हैं । अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण ही हिन्दी कहानीकारों में मोहन राकेश शायद सबसे अधिक लोकप्रिय कहानीकार थे ।[1] नयी कहानी के दौर में सर्वाधिक चर्चित एवं बरबस ध्यान खींचनेवाले कथाकार मोहन राकेश रहे ।

औद्योगीकरण एवं विज्ञान के विकास के बढ़ते प्रभाव से महानगरीय या कस्बाई जीवन ही नहीं भारतीय संस्कृति की आत्मा गाँव भी इसकी चपेट में आ गये । आधुनिकता का प्रश्न पश्चिमी देशों की सभ्यता एवं संस्कृति के अति निकट है, फिर भी राकेश की आधुनिकता भारतीय आधुनिकता के समानान्तर है ।[2]

---

१ विवेक के रंग - डॉ. देवीशंकर अवस्थी - पृ. ३७३ ।

२ आधुनिकता और मोहन राकेश - डॉ. ऊर्मिला मिश्र - पृ. ५६ ।

औद्योगीकरण, विभिन्न संचार माध्यम आदि के द्वारा दुनिया नजदीक आ गयी है । मनुष्य ने अपनी सुख-सुविधाओं को अविष्कृत किया परंतु बढ़ती हुयी यांत्रिकता ने मनुष्य-मनुष्य से अलग होता गया । किसी शायर ने ठीक ही कहा है --

` कहते है दुनिया सिमट गयी
लेकिन मेरी इच्छाएँ अनेक खानों में बट गई ।`

क्योंकि आज का मनुष्य अपने आसपास पैदा हुए सवालों से टकराता है, टूटता है और निर्वासित हो रहा है । वह अपने जीवन में वैज्ञानिक उपलब्धियों को जाने-अनजाने स्वीकार कर रहा है और वैज्ञानिक विचारधारा ही आधुनिकता की धारणा बन गई है । अत: आधुनिकता ने वार्तालाप के दायरे को नितांत सीमित एवं संकुचित कर दिया है । इसी कारण व्यक्ति अकेलेपन से निकलने और परिवेश से जुड़ने के लिए व्याकुल हो रहा है । इन्सान अपनी इच्छाओं के सहारे जीना चाहता है पर हालात (परिस्थिति) उसे वैसे जीने नहीं देती ।

मोहन राकेश जी ने कुल ५६ कहानियों का सृजन किया है । उनकी अधिकांश कहानियों में आधुनिकता को आँका जा सकता है । उसे सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक संदर्भों में प्रस्तुत किया जा रहा है ।

(१) <u>सामाजिकता के संदर्भ में आधुनिकता</u> ---

सामाजिक परिवर्तनों का आधार ही आधुनिकता की मुख्य भूमि है । आधुनिक युग में सामाजिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के बदलाव आते गये, उसी को राकेश ने कहानियों में मुखर किया है ।

सामाजिकता के संदर्भ में आधुनिकता को मुख्य दो आयामों के भीतर आँका जा सकता --

(१) सम्बन्धों का विघटन एवं जुड़े रहने की अकुलाहट ।

(२) बिल गाव एवं खंडित होने की प्रकिया ।

आधुनिक जीवन में आधुनिकीकरण के कारण बदलाव आये हैं । सम्बन्ध टूट-टूट कर बिखर रहे हैं, इसी परिप्रेक्ष्य में मोहन राकेश जी की कहानियों में सम्बन्धों का विघटन और उससे जुड़े रहने की अकुलाहट के संदर्भ में आधुनिकता व्याप्त है । सारे संबंध टूट तो रहे हैं पर व्यक्ति अलग होकर जीना नहीं चाहता, तो उसमें जुड़कर रहने की अकुलाहट है । व्यक्ति आधुनिकता के शिकंजे में फंसकर अपने आपको अलग अनुभव करता है, इसीलिए व्यक्ति खंडित होते जाने की प्रक्रिया में टूटता जा रहा है । इसी को मोहन राकेश जी ने अपनी कहानियों में बड़ी ही सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है ।

(१) सम्बन्धहीनता --

आधुनिक युग में व्यक्ति व्यक्ति के बीच एक विरानापन, अजनबीपन बढ़ता जा रहा है, जिसका प्रभाव सम्बन्धों पर पडता है । स्थिति यह है कि, स्त्री-पुरुष, पति-पत्नी, माता-पिता, भाई-बहन, प्रेमी-प्रेमिका आदि के सम्बन्ध महत्वहीन हो गये हैं । परिणामत: अन्य सम्बन्धों की अपेक्षा स्त्री-पुरुष या पति-पत्नी के सम्बन्धों का चित्रण राकेश की कहानियों में जादा मिलता है ।

' एक और जिंदगी ' कहानी में पति-पत्नी के टूटते सम्बन्ध और फालतू होती हुयी जिंदगी का चित्रण है । परिस्थिति के साथ संतुलन न करने की कहानी नायक प्रकाश की कमजोरी उसे हर गलत छोर पर ला खड़ा कर देती है । जितनी तेजी के साथ बीना और प्रकाश का परस्पर विरोध सम्बन्ध विच्छेद में परिवर्तित हो गया, उतनी ही तेजी से विक्षिप्त रोग से ग्रस्त निर्मला से उसका विवाह उसके लिए नया नरक बन गया । प्रकाश ' एक ऐसी लड़की चाहता था जो हर लिहाज से उसपर निर्भर करे और जिसकी कमजोरियाँ एक पुरुष के आश्रय की अपेक्षा रखती हो ।[१] ' प्रकाश के ऐसे निर्णय ने ही उसे बीना से अलग किया ।

---

१ मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - पृ. २८१ ।

निर्मला से शादी करने के पश्चात गलत चुनाव के कारण वह सिर्फ अन्दर ही अन्दर घुटता जाता है। वह घर के वातावरण से ऊबकर एकांत की तलाश में पहाड़पर चला जाता है। वहाँ अपनी पहली पत्नी के बेटे को देखकर उसके अंदर छटपटाहट होती है। प्रकाश में अपने बच्चे से जुड़ जाने की छटपटाहट है। ऐसी स्थिति में वह अपने जीवन के खालीपन को भरने के लिए शराब का सहारा लेता है। इस तरह बीना और निर्मला से अलग होकर वह अपने आप को शराब में खोजने लगता है।

'जख्म' का नायक अपनी असंगति, खालीपन एवं फालतू होने की मजबूरी को शराब में डुबो देना चाहता है। जख्मी अपनी पत्नी के रूप में एक ऐसी लड़की का चुनाव करना चाहता है जो अपना भार खुद सम्भाल सकती हो।[1] कहानी में सम्बन्धविहीनता के कारण उत्पन्न अकेलेपन का यथार्थ चित्रण है। जख्मी अपने आपको घर से और समाज से कटा हुआ महसूस करता है। वह कहता है 'मुझे समझ आ रहा है कि मैं बिलकुल कट गया हूँ .... हर चीज से बहुत दूर हो गया हूँ।'[2] इस कहानी में आधुनिकता अपने अपने ढंग से जीने में दिखाई देती है।

'गुंझाल' कहानी में पति-पत्नी के व्यर्थ होते सम्बन्धों का चित्रण है। चन्दन और कुंतल पति-पत्नी होकर भी आपसी तनाव के कारण एक दूसरे से दूर है। चन्दन कुंतल से कुछ जानना चाहता है पर कुंतल कुछ भी नहीं चाहती। 'तुम अपने मन में क्या चाहती हो, क्योंकि, तुम्हारे मन की बात का मुझे अभी तक पता नहीं चल सका।'[3] कुंतल स्पष्ट करती है 'हम अपने लिए न तो कुछ चाहते हैं और न ही इस विषय में हमें कोई बात करनी है।'[4] दोनों एक दूसरे के साथ

---

१ मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - पृ.४१६।

२ - वही - पृ.४१५।

३ - वही - पृ.३८२।

४ मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ पृ.३८२।

चाहकर भी नहीं रहना चाहते और दोनों एक दुसरे से मुक्त होना चाहकर भी मुक्त नहीं हो पाते । दोनों के बीच एक न बूझानेवाली पहेली है जिसको सुलझा न पाने के कारण दोनों टूट-टूट कर बिखर रहे है । कहानी के अंदर का ' निर्णय ' का प्रश्न निरंतर पति-पत्नी के अंदर चलता है जिसका उत्तर चाहकर भी वे नहीं दे पाते । इसी प्रश्न की निरंतरता में आधुनिकता है ।

(२) बेगानापन --

आधुनिक युग में बेगानापन की स्थिति बहुत गहरे में है । ' बाँगान ' कहानी का परिवेश भारतीय है, नायक अभारतीय है । इस कहानी का नायक और उसकी पत्नी का तलाक हो चुका है । कथानायक हेनरी विल्सन साहब का सम्पूर्ण जीवन निर्वासित की भाँति रहा है और उसकी मृत्यु भी निर्वासित ढंग से ही हुई । हेनरी विल्सन एक फैशनपरस्त नवयुवक था । पत्नी लिजी हेनरी के जीवन से तंग आकर उसे तलाक देती है । विल्सन अपनी पत्नी और बेटे से दूर लंदन से भारत आकर एक छोटे से कस्बे में ' साहब ' बनकर रहता है । पत्नी और बेटे के अभाव में उसे जिंदगी बोझिल और बेगानी लगती है । अत: वह पुन: हेनरी विल्सन बनकर जीना चाहता है । जिसके लिए सत्रह वर्षीय ' सन्तो ' को कुछ पैसे देकर वह अपने साथ रख लेता है । लेकिन संतो साहब के समान-स्तर की न होने के कारण वह सिर्फ अपना शरीर उसे दे पाती है । ' सन्तो उसे नि:संकोच भाव से अपने शरीर से खेल लेने देती थी और जब वह खेल चुकता तो सारे घर में खुशी से नाचती फिरती थी ।'[१] साहब को अपने देश की बार-बार याद आती है । इसीकारण वह सम्बन्धों की व्यर्थता में टूटता जाता है और उसका जीवन बेगानेपन से भरा हुआ है । इस कहानी में उसकी मृत्यु भी बेगाने लोगों के बीच होती है । इस ' बाँगान ' में भारतीय परिवेश में अभारतीय बेगानगी को आधुनिक जटिलता के साथ अभिव्यक्त किया है ।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.१९६ ।

(३) व्यर्थता --

आधुनिक युग में जीवन सम्बन्धों की व्यर्थता, संवादविहीनता, कारण रहित जीवन की व्यर्थता में चल रही है। इसी कारण से टूट रहे संबंधों के तनाव में आधुनिकता अभिव्यक्त होती है।

'नये बादल' में सम्बन्धों की व्यर्थता दिखायी देती है। कहानी के सभी पात्र एक धर्मशाला में मुसाफिर की तरह एकत्रित होते हैं और सुबह होते ही संवाद विहीन ढंग से एक दूसरे से कट जाते हैं। सभी पात्र एक दूसरे की ओर संशय की दृष्टि से देखते हैं। इस पर धर्मशाला के चौकीदार के उद्गार महत्वपूर्ण हैं। 'मैं धर्मशाला की चौकादारी करता हूँ जी, यहाँ आनेवालों के धर्म-ईमान की चौकीदारी नहीं करता।'[१] कहानी के पात्र एक-दुसरे के साथ रहकर भी मानवीय सम्बन्धों के भाव से युक्त नहीं हैं। मानवीयता उनके लिए कोई माने नहीं रखती। इस कहानी के कारण रहित जीवन की व्यर्थता में आधुनिकता स्पष्ट होती है। कहानी में अजनबीयत का कुहरा शुरुआत से अंत तक छाया हुआ है। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में यह कहानी नगरों में जी रहे लोगों की, संवादहीन लोगों की कहानी बन गयी है।

'आर्द्रा' कहानी में जीवन की व्यर्थता एवं सम्बन्धों का तनाव चित्रित है। इस कहानी में भाई-भाई के बीच का स्नेह संबंध का टूटकर तनाव में परिवर्तित होना तथा इनके अंतराल में छट पटाती माँ का चित्रण किया है। बड़ा भाई छोटे भाई से अलग सुख-सुविधा संपन्न जीवन व्यतीत करता है। तो छोटा भाई अभावों से ग्रस्त जीवन यापन करता है। उन दोनों के बीच माँ की तनावपूर्ण जिंदगी चलती है। एक तरफ माँ छोटे बेटे की अभाव ग्रस्त जिंदगी से छटपटाती है, उसके लिए 'वह सोचती और करवटें बदलती रहती।'[२] और दूसरी

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.३०९।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.४८।

तरफ बड़े बेटे के पास जाकर अजनबी और मेहमान सा अनुभव करने लगती हैं। उसकी बहू उससे शिष्टता और कोमलता से बात करती थी, उससे बचन को लगता था कि वह उस घर में केवल मेहमान हैं।[१] उस संवादविहीन घर में रहकर वह एक दो दिन में ही ऊब जाती हैं। इस तरह आधुनिकता सम्बन्धों की निरर्थकता में और संवादविहीन अपने ही घर में मेहमान होने की व्यथा में अभिव्यक्त हुई हैं।

(४) महानगरीय परिवेश --

नगरीय परिवेश में रची-बसी व्यर्थता, अजनबीपन, सम्बन्धों की निरर्थकता और अमानवीयता आदि में आज का मनुष्य टूटता जा रहा हैं।

औद्योगीकरण के कारण फौलाद की तरह ठण्डे और जड़ दाम्पत्य सम्बन्ध आज अनेक परिवारों की समस्या हैं। आज पति-पत्नी के सम्बन्ध तो टूट ही गये हैं पर साथ जुड़े रहने की सामाजिक मजबूरी हैं। 'फौलाद का आकाश' में मीरा अपने पति रवि के साथ रहकर भी दूर और अलग अनुभव करती हैं। वह 'अन्तरंग से अन्तरंग क्षणों में भी अपने को रवि से अलग, बिल्कुल अलग पाती हैं।'[२] उसे अपने पति के सेहत के मामले में सहानुभूति होती हैं, पर उस सहानुभूति में एक तटस्थता भी रहती।'[३] मीरा अपने पति और मित्र दोनों के लिए मात्र देह संतुष्टि का साधन बनकर रह जाती हैं। उसका पति रवि एक व्यस्त अधिकारी हैं। सुबह से शाम तक अपने काम में व्यस्त रहता हैं। लेकिन रात को मीरा की आवश्यकता जान पड़ती हैं। मिलन के दौरान भी वह कुछ दूर तक जाकर, मीरा से अलग होता हैं। तो मीरा को लगता हैं 'जैसे अब भी लिखते लिखते हाथ थक जाने से उसने कागज परे हटा दिया हो।'[४] इस कदर सम्बन्धों में यांत्रिकता आ गयी हैं। जब मीरा अपने कॉलेज के मित्र रायकृष्णदास से मिलने जाती हैं तो वहाँ भी उसे मित्र का सम्बन्ध देह स्तर पर ही करने का बोध मिलता हैं। इस प्रकार मीरा अपने पति और मित्र दोनों के लिए 'रिलैक्स' होने का

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.४७।
२ - वही - पृ.११७।
३ - वही - पृ.११७।
४ - वही - पृ.११४।

माध्यम बनकर रह जाती है । इसके अतिरिक्त मानों उसकी अन्य उपयोगिता ही नहीं है । इस महानगरीय परिवेश में व्यस्त जिन्दगी के सम्बन्ध का लोप होकर, व्यक्ति को मात्र पूर्जा बना दिया है । इस तरह टूट कर भी जुड़े रहने की कसमसाहट में आधुनिकता व्यक्त होती है ।

महानगर में टूटते परिवारों का दर्द ' क्वार्टर ' कहानी में मिलता है । कहानी में परिवार के सभी सदस्य स्वयं में सिमटे हुए और एक दूसरे से अलग और कटे हुए हैं । वे एक दूसरे को दोष देते हैं और क्रोधित होते हैं । एक ' क्वार्टर ' में सभी रह कर भी न रहने की तरह हैं, एक दूसरे से न जुड़कर भी जुड़े रहने का असफल प्रयास करते हैं । बाप-बेटे, बहु-बेटी, भाई-भाई सभी सम्बन्धों की निरर्थकता में एक दूसरे से कटे, अजनबी और फालतू हो चुके हैं । एक दूसरे के प्रति किसी के मन में स्नेह नहीं है । बाप वृध्दावस्था और बेकारी से टूट रहा है । जिसके कारण वह अपने बहु-बेटे के साथ रह कर भी मेहमान हो गया है । भाई - भाई से, पति-पत्नी से अलग हैं । राधा बेबी को लेकर अलग ही टूट रही है । सभी एक दूसरे के लिए अजनबी और बेगाने से लगते हैं । दुसरी तरफ शंकर सभी प्रकार के सम्बन्धों से घिरकर भी अकेला और खालीपन महसूस करता है । अकेलेपन की यंत्रणा और व्यर्थ होते गये सम्बन्धों में आधुनिकता स्पष्ट होती है । वास्तव में महानगर में आधुनिकीकरण के संदर्भ में आज परिवार का ढाँचा चरमराकर टूट गया है ।

(५) अनिर्णय का दर्द --

आधुनिकता के दौर में मनुष्य निर्णय और अनिर्णय की कगार पर खड़ा है । उसे क्या करना चाहिए तथा क्या नहीं करना चाहिए, इसका निर्णय वह नहीं कर पा रहा है । इसी दर्द की आधुनिकता राकेश की कहानियों में मिलती है ।

' सुहागिनें ' कहानी में पति-पत्नी के संबंध एक-दूसरे से परे हैं । किसी का होना या न होना कोई माने नहीं रखता । सभी को किसी न किसी आवश्यक्ताओं की पूर्ति के लिए अलग-अलग रहना पडता है । मनोरमा को पति (सुशील) से दूर जाकर नौकरी करनी पडती है । काशी अपने पति से दूर

रहकर बच्चों का पालन पोषाण करने के लिए स्कूल में दाई का काम करती हैं । पति की दूरी मनोरमा के अन्दर की दूरी के रूप में निरंतर बनती हैं । दोनों की व्यस्त जिंदगी दोनों को एक दूसरे से काटकर रख देती हैं । जब भी पति सुशील की चिट्ठी आती, तो उसे लगता कि अकेलापन दूर हो जायेगा । पर चिट्ठीयाँ पढ़ कर उसे लगता कि ' जैसे वह एक चश्मे से पानी पीने के लिए झुकी हो ।'[1] उसका अलगाव उसे एक हिलती-डुलती काया मात्र बना देता हैं । दूसरी तरफ काशी अपने पति अयोध्दा से सिर्फ इसलिए जुड़ी हैं कि वह उसका पति हैं । कहानी में सभी सम्बन्धों का बोध बना रहता हैं । मनोरमा सुशील से कुछ कहना चाहती हैं और वह अपना खालीपन उसे बताना चाहती हैं, लेकिन चाहकर भी कुछ नहीं कह पाती । अत: इस कहानी में अनिर्णय की स्थिति में आधुनिकता दिखाई देती हैं ।

' ग्लासटैंक ' कहानी में चुनाव के निर्णय एवं अनिर्णय का दर्द हैं । इसीलिए वह सुभाष्ा के निर्णय से उत्पन्न घुटन और अकेलेपन के साथ नीरज और उसकी माँ के अनिर्णय से उत्पन्न अवसाद एवं घुटनपूर्ण जिन्दगी की कहानी हैं । कहानी की ममा अतीत की जिन्दगी के डॉक्टर शम्भुनाथ से तो नहीं जुड़ पायी उसके बेटे सुभाष्ा से अवश्य जुड़ी हुई हैं । ममा सुभाष्ा की बाते सुनते - सुनते काम करना भूल जाती थीं ।'[2] सुभाष्ा को देखकर उसके पिता शम्भूनाथ की स्मृति एवं अनिर्णय के दर्द को चुपचाप सह लेती हैं । लेकिन पति के डर से प्रेम को जबान पर आने नहीं देती । दूसरी तरफ नीरज के मन में सुभाष्ा के प्रति आकर्षाण रहता हैं । सुभाष्ा अपनी निरीहता और दीनता में भी नीरज के लिए महत्वपूर्ण हैं । बचपन में उसे ' ब्राऊन कैट ' कहता था । आज बड़ा होने पर उसकी छोटी बहन को सहलाते हुए 'ब्राऊन कैट' ही कहता है, तो नीरज की प्रतिक्रिया हैं -- ' यह भी लगता कि मैं आँखों से कह रहा हूँ कि जिसे तुम सहला रहे हो, वह ब्राऊन कैट नहीं हैं । ब्राऊन कैट मैं हूँ । मैं यहां से दूर अंधेरे में खड़ा हूँ । चाह रहा हूँ कि कोई आकर मुझे देख ले और गोद में उठा ले ।'[3]

---

१ मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ - पृ.१५८ ।

२ - वही - पृ.५३ ।

३ मोहन राकेश की सम्पूर्ण कहानियाँ पृ.६० ।

नीरव मानो अन्धेरे में खड़ी होकर निश्चय नहीं कर पा रही हैं । उसका चुनाव अवसाद बनकर हृदय के अंदर घुमड-घुमडकर रह जाता हैं । ममा भी सुभाषा को देखकर अपने अतीत की पीड़ा से झुलस जाती हैं और उसी भावाकुता में नीरव से कहती हैं - ` नीरव, और जैसी भी होना ... अपनी ममा-जैसी कभी न होना ।`[१] सच्चाई तो यह हैं कि ममा सुखी हैं पर मन का सुख पति के साथ कहाँ मिलता हैं । पर आज उसके लिए आत्मपीड़ा से मिलनेवाला सुख ही रह गया हैं । इस कहानी में नीरव और ममा के अनिर्णय के दर्द के साथ आधुनिकता मुखर होती हैं ।

([redacted])

(६) अपरिचय में परिचय की छाया -- (अपरिचय अंतर्गत परिचय)

संबंधों की व्यर्थता के कारण आज मनुष्य परिचय से अपरिचय तथा अपरिचय में परिचय की स्थिति में टूट रहा हैं ।

` अपरिचित ` कहानी में सभी पात्र एक-दुसरे के पास रहकर अजनबी और बेगाने हो गये हैं । सभी सम्बन्ध निरर्थकता में साँस ले रहे हैं । ` अपरिचित ` की पत्नी स्वयं को सामाजिक दृष्टि से ` मिसफिट ` समझाती हैं । वह बात - बेबात ही सोचती रहती हैं । न चाहने पर भी पति के सामने उसके माथेपर शिकन बनी रहती हैं । जिसे देखकर उसके पति दीशी को चीढ़ और झुंझालाहट होती हैं । पत्नी कहती हैं ` मैं बहुत-से परिचित लोगों के बीच अपने को अपरिचित, बेगाना और अन मेल अनुभव करती हूँ ।`[२] दीशी की पत्नी ऊँची एवं एडवान्स सोसायटी में एडजस्ट नहीं कर पाती, वह अपने को ` मिसफिट ` समझाती हैं । वह पहाड़ के पास बच्चों के साथ जुड़कर आत्मीयता अनुभव करती हैं । पति के साथ उसका दम घुटता हैं । यह सब बातें वह रेल के सफर मिले एक अपरिचित ` मैं ` को बड़ी आत्मीयता से बताती हैं । दूसरी तरफ ` मैं ` दीशी

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.६३ ।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.९३ ।

की पत्नी से जुड़ा हुआ हैं । वह अपनी पत्नी नलिनी से जुड़कर भी कहीं-न-कहीं से कट गया हैं । वह समझौता करके आगे बढ़ने का प्रयत्न नहीं करता । ` मैं ` अपने आप को भी सामाजिक परिवेश में ` मिसफिट ` समझता हैं, परिणाम स्वरूप नलिनी उसके साथ रहकर भी अजनबी और बेगाना महसूस करती हैं । ट्रेन का सफर दीक्षी-पत्नी और ` मैं ` को अपरिचित होते हुए भी परिचित की तरह जोड़ देता हैं । वे अजनबी रहते हुए भी, सामाजिक संस्कार उन्हें परिचित और एक-दुसरे के अति निकट लाकर खड़ा कर देते हैं । ` मैं ` उसके लिए जानपर खेलकर पानी लाता हैं । दीक्षी-पत्नी बीच के स्टेशनपर उतर जाती हैं, तब ` मैं ` गहरी निंद में रहता हैं । जागने पर देखता हैं कि ` कम्बल के अलावा मैं अपनी रजाई भी लिए हुए हूँ जिसे अच्छी तरह कम्बल के साथ मिला दिया गया हैं । `[१] कहानी में पति-पत्नी के व्यर्थ होते हुए सम्बन्ध और अपरिचित में परिचय की गहरी छाया में आधुनिकता स्पष्ट होती हैं । इसके साथ ही यहाँ आधुनिकता अपरिचय में अतिपरिचय और अतिपरिचय में अतिअपरिचय के बीच उभरती हैं । परिचय के बीच अपरिचय की छाया और अपरिचय के बीच परिचय होने की स्थिति आत्मीय लोगों के बीच बेगाने होने की यन्त्रणा के कारण होती हैं ।

व्यक्ति समूह या भीड़ में अपना परिचय खोता जा रहा हैं । यहाँ तक की व्यक्ति परिवार के बीच पहचान की तलाश में खोया हुआ हैं । ` पहचान ` कहानी में लड़का शिवजीत अपनी पहचान की तलाश में खाली, अजनबी और परिचित लोगों के बीच भी मेहमान अनुभव करता हैं ।

(७) अलगाव एवं औपचारिकता ---

मानवीय सम्बन्धों एवं निरंतर संघर्षों की दुनिया से भिन्न एक अमानवीय दुनिया भी होती हैं । जहाँ अपने अलग अस्तित्व को लेकर बहुत सारे लोग इकट्ठा दिखाई देते हैं और एक दो भी । ऐसे लोगों में न आपसी रिश्ता

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.९६ ।

होता है न मानवीय सहानुभूति होती है । दर असल यह एक ऐसी निर्वासित दुनिया होती है जहाँ लोगों की भीड़ या समूह तो दिख पड़ता है पर इन्सानियत के आसार भी नजर नहीं आते । इस प्रकार की कहानी होती है साधारण इन्सान की भीड़ में छीपे इन्सान की ।

` बस स्टैण्ड की एक रात ` ऐसी ही एक कहानी है । इसमें एक लड़का है जो बहुत कड़ी ठण्डी रात में बस स्टैण्ड पर सुबह की बस का इंतजार कर रहा है । उसके पास मास्टर हरबंसलाल के डण्डे से जुड़ा हुआ एक नन्हा-सा इतिहास है । यह इतिहास मारपीट एवं स्कूल की गिनतियों का तथा स्कूल की दुःखद जिन्दगी का इतिहास है । लेकिन यह इतिहास महज उसकी स्मृति में इतिहास से अलग होकर बस-स्टैण्ड तक चला आया है । बस स्टैण्ड पर इकट्ठा हुए लोगों का इस लड़के से कोई वास्ता नहीं है । उसी जगह ढीले-ढाले बदन की एक औरत भी है । जहाँ बाँधराइन, नूरजहाँ बेगम और ठण्ड में गर्मी देनेवाली अंगीठी सब अकेले हैं । वह लगातार अपने आस-पास के लोगों से दुसह्य आक्षेप सहती है । आक्षेप अत्यन्त हीन एवं अमानवीय है । फिर भी यह कहानी ऐसे लोगों का एक लम्बा सिल सिला है जो आग के पास आते हैं, जाते हैं । क्रमशः अपनी ताकत और हैसियत के अनुसार अंगीठी पर कब्जा करते हैं । तरह तरह की व्यर्थ बातें करते हैं । अन्ततः अंगीठी बस स्टैण्ड के मैनेजर के पास चली जाती है, सब लोग मुँह ताकते रह जाते हैं । यहाँ मानवीयता की चरम सीमा हो जाती है । लड़का महसूस करता है, ` अंगीठी के पास जितने लोग खड़े थे, वे न जाने किन कोनों में जा समाए हैं ।`[१] दर असल राकेश जी की यह कहानी अमानवीयता की कहानी है । कहानी में आधुनिकता अमानवीकरण की स्थिति से स्पष्ट होती है ।

` पाँचवे माले का फ्लैट ` का अविनाश बेकारी में निर्वासित जीवन व्यतीत करता है । वह उस फ्लैट में कई लोगों से घिरा होकर भी अकेला और अजनबी-सा है । वह अपनी परिचित प्रमिला और उसकी बड़ी बहन के बीच भी

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. २४५ ।

अपने आप को बेगाना अनुभव करता है । उसका अलगाव बोध ही ` पाँचवे माले के फ्लैट ` में उसे अकेला और बिखरी जिंदगी बसर करने के लिए विवश करता है । अलगाव और एकाकीपन के यथार्थबोध में आधुनिकता स्पष्ट होती है और महानगरी बोध से जुड़ कर गहरी होती है ।

` अर्ध्दविराम ` के पति-पत्नी एक साथ रह कर भी एक-दुसरे से अलग और औपचारिक रूप से बँधे है । दोनों के बीच की कहानी के ` मैं ` (व्यक्ति) के कारण एक लम्बा अन्तराल-सा आ जाता है । ` मैं ` के हृदय के किसी कोने में मदन की पत्नी के प्रति अनुराग छिपा रहता है । लेकिन ` उसकी मौजूदगी में बेगाना महसूस होता है ।`[1] और मदन अपने मित्र में कुछ टटोलना चाहता है लेकिन अंततक असफल रहता है । ` मैं ` के जीवन में एक अर्ध्दविराम है जो पूर्ण नहीं हुआ है । उसकी अपूर्णता में ही आधुनिकता स्पष्ट होती है ।

` एक पंखयुक्त ट्रेजडी ` कहानी में प्रेम पर तीखा व्यंग्य है । प्रो.चोपडा के घर में युवकों और युवतियों में प्रेम पर हमेशा बहस हुआ करती है । अगर यह कहानी प्रेम के हास्य की सीमातक समाप्त करने की कहानी होती तो कतई आधुनिक कहानी नहीं होती । दर असल प्रणय का एक करुण पक्ष भी होता है जो सामाजिक स्तर पर हास्यास्पद हो जाता है । इस कहानी की भूमि लाक्षणिक है । कहानी में एक दिन प्रेम से सम्बध्द एक घटना घटती है । प्रो. चोपडा कहीं से भूरे और नीले पंखोंवाली एक सुन्दर मुर्गी लाकर अपने घर के लान पर छोड़ देते है । उनका काला मोटा मुर्गा उसपर मुग्ध होकर, अपने साथ चोंच में चोंच फँसाकर उसे प्रेम करने के लिए बाध्य करता है । पडोस का एक सफेद मुर्गा उसे चुनौती देता है और दोनों में जोर से लड़ाई शुरू होती है । काला मुर्गा अपनी जानपर खेलकर विजय में झूमता हुआ लान में आकर अपनी मुर्गी

---

[1] मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.४६६ ।

को बुलाता है, लेकिन मुर्गी प्रो.चोपडा के मेहमानों का खाद्य बनकर मेज की शोभा बढ़ा रही होती है । इस प्रतीक कथा में मुर्गे एवं मुर्गी को युवक और युवतियों के रूप में चित्रित किया गया है । मुर्गा विजयी होकर लौटता है तो अपनी प्रेयसी मुर्गी को खाने की टेबुलपर पाने का एहसास करता है । दर असल यह अहसास नहीं है, यह एक घटना है ।

इसी तरह आज की जिंदगी में कई घटनाएँ अत्यंत करुण होते हुए भी उतना मन पर असर नहीं होता । महज एक `मामूली खबर` या साधारण-सी सूचना बन जाती है । घटना का मामूली सूचना तक रह जाना आज जिंदगी का यथार्थ संत्रास है । कुछ वैसे ही जैसे हत्या, रेप या विवाह की सूचना का अखबार में एक-साथ एक तरह से पढ़ना ।

इसी औपचारिकता,अलगाव,बेगानेपन की दुनिया में संवेदनशील नारी का चित्रण राकेश ने अच्छी किया है । `उसकी रोटी` वैसे तो कहानी प्रेमचंद परम्परा की बन जाती है, पर सम्बन्धों व्यर्थता एवं औपचारिकता के रंग के कारण आधुनिक बन जाती है । इस कहानी में पति-पत्नी किसी एक स्तर पर एक दुसरे से बंधे है । पति सुच्चासिंह के आने की प्रतीक्षा में उसकी पत्नी टूट रही है । परंतु वह अपने बीते हुए सुखद यादों को अनुभव कर सिहर उठती है । उसको क्या पता था कि उसे सुच्चासिंह जैसा पति मिलेगा । पति खुश रहे इसलिए `घर की परेशानियाँ वह खुद संभाल सकती है ।`[1] चिरंतन काल से चली आई पति परमेश्वर वाली परम्परा को आधुनिक परिवेश में भी लेखक ने विद्यमान दिखाया है ।

बिलगाव एवं खंडित होने की प्रक्रिया --

आधुनिकीकरण एवं विज्ञान के प्रभाव के कारण मनुष्य मात्र पूर्जा बनकर रह गया है । वास्तविकता की त्रासद स्थिति एवं परिवेश दबाव के कारण उसके अन्दर व्यापक संक्रांति की स्थिति उत्पन्न हुई है । परिणामत: उसकी मानसिकता

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. २३८ ।

का स्तर बदला हुआ है । वह आपसी रिश्तों के अंदर केन्द्रीत होकर संकुचित बन गया है । निरंतर अकेला बनता जा रहा है । यह अकेलापन मनुष्य के जीवन में सामाजिक स्थिति बन गया है । एकांत की कामना और अकेलेपन की दुर्निवार अनुभूति ही व्यक्ति को बिलगाव की स्थिति में लाकर खड़ा कर देती है । वह भीड़ में अकेला है, परिणामस्वरूप व्यक्ति सबसे कट कर जीने के लिए विवश है । यही स्थिति आत्मनिर्वासन के लिए कारण बनती है । दूसरी तरफ आधुनिक भाव-बोध ने मनुष्य को स्थापित मान्यताओं एवं सामाजिक रीति-रिवाजों से काटकर रख दिया है । आधुनिकीकरण ने ही आदमी आदमी के जीवन में औपचारिकता भर गयी है । राकेश की कहानियों में भारतीय परिवेश में निरंतर खंडित होते हुए आदमी का चित्रण प्रखरता से दिखायी देता है ।

(८) आत्म निर्वासन ---

राकेश जी की ` जख्म ` केवल कहानी नायक जख्मी आदमी की ही कहानी नहीं है बल्कि आज के उन तमाम इन्सानों की कहानी है, जो मानव-नियति की भयानक प्रवंचना में जी रहे हैं । इस कहानी में जख्मी आदमी का संत्रास उसका केवल अपना नहीं है, सार्वदेशिक है । जख्मी बिखरा हुआ, भटका हुआ दिखाई दे सकता है किन्तु उसे दुर्दान्त यथार्थ ने तोडा है । उसे व्यवस्था विरोधी बनाया है, इसकी स्पष्ट छाया पूरी कहानी के परिवेश में है । कहानी नायक अमानवीय दौडधुप के बाद भी जीवन में कोई निर्णय नहीं ले पाता, जीने के लिए निश्चित ध्येय नहीं ढूँढ पाता । वह भीतर बाहर से लहुलुहान होकर भी जिन्दा है । कहानी के ` मैं ` से वह कहता है --- ` इतना तुम्हे अवश्य बता दूँ, कि मुझे कम से कम बीस साल और जीना है । तुम्हारे या दूसरे लोगों के बारे में मैं नहीं कह सकता... पर अपने बारे में कह सकता हूँ कि मुझे जरूर जीना है । `[१] वह जीने के लिए जीवनसाथी के रूप में ऐसी लड़की का चुनाव करना चाहता है, जो बेकारी आनेपर ` जो अपना भार खुद संभाल सकती हो ।`[२] वह विवाह करने का सिर्फ

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.४१८ ।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.४१६ ।

फैसला ही करता है, असल में वह विवाह नहीं करता । क्योंकि वह ` जैसा बेकार कल था, वैसा ही आज भी `[1] है । उसकी यही असंतुष्ट की स्थिति उसे फालतू और भविष्यहीनता के कारण आत्मनिर्वासन कीस्थिति में ला खड़ा करती है । इस कहानी में अस्तित्ववादी आधुनिकता आत्मनिर्वासन में स्पष्ट होती है । स्टैंव असंतुष्टि की अनुभूति ` जख्म ` के ` वह ` को निरंतर खंडित रहने के लिए मजबूर करती है ।

राकेश की ` मुंदी ` कहानी का बुड्ढा एक कप चाय की तलाश में निरंतर खंडित हो रहा है । ` वारिस ` कहानी का मास्टर अपने अकेलेपन और बेकारी के कारण आत्मनिर्वासित बन गया है । वह इस परिस्थिति से तंग आकर एकांत की तलाश में घने पहाड़ों के बीच जिन्दगी बसर करने की इच्छा रखता है । मास्टर निश्चय करते हैं कि ` फिर उससे आगे घने पहाड़ों में चले जाएगे, जहाँ से फिर कभी लौटकर नहीं आएगे । `[2]

विज्ञान के युग में आदमी जीवन की सार्थकता नहीं ढूँढ़ पा रहा है । हरेक व्यक्ति के मन में अनेक सवाल उत्पन्न हो गए हैं । जिससे सारी भौतिक उपलब्धियों के बीच आदमी पराया हो गया है । ` गुमशुदा ` कहानी में नायक के पास पत्नी, पैसा, और अन्य भौतिक साधन उपलब्ध है । नायक कहानी के ` मैं ` से कहता है कि ` मैं सोचता हूँ कि हम जिंदगी में कुछ भी करें, उसमें समय बर्बाद ही तो होता है । समय का उपयोग क्या है ? और इन्सान की जिंदगी का ही उपयोग क्या है ? `[3] वह अपने खालीपन को भरने के लिए पिक्चर, काफी हाऊस और जगह जगह जाता है फिर भी व्यर्थता के सवाल से मुक्त नहीं हो पाता । वह वर्तमान जिंदगी में आत्मनिर्वासित हो गया है । आत्मनिर्वासन की स्थिति में आधुनिकता झलकती है ।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.४१७ ।

२ - वही - पृ.४२३ ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.४६४ ।

(९) अनिर्णय के कारण उदासीनता --

निरंतर अनिर्णय के कारण आज का मनुष्य उदासीन बना है । उसकी यह स्थिति उसे जीवन में भटकाव के सिवा कुछ नहीं देती । राकेश की `दोराहा`, `धुंधला दीप `, `लक्ष्यहीन ` कहानी में एक ही व्यक्ति की मन:स्थिति का चक्र चलता है ।तीनों कहानियों के मुख्य पात्र `केसरी ` है । कहानी नायक जीवन के `दोराहे ` पर से `धुंधले द्वीप ` की ओर बढ़ता है, वहाँ पहुँचकर उसे पता चलता है कि वह `लक्ष्यहीन ` हो कर रह गया है । अनिर्णय की स्थिति के कारण ही केसरी के `जीवन में न दिशा है न मंजिल` ।[१] अतीत उसके जीवन में हलचल पैदा करता है, जिससे वह भटक गया है । उसके जीवन में पूर्णिमा और श्यामा दो युवतियाँ आती है । वह दोनों से जुड़ना नहीं चाहता है । लेकिन `नये वर्षा के दिन पुराने वर्षा की स्मृतियाँ`[२], उसे श्यामा से अनायास जोड़ देती है । इस तरह केसरी का दोराहे पर आकर जीवन से भटक जाना ही जीवन के `धुँधलादीप ` की गवाही देता है । आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में व्यक्ति अपने लिए और अपने तरह से जीने के लिए स्वतंत्र है । आज उस पर थोपे हुए भार को ढोने में असमर्थ है । श्यामा केसरी के जीवन में अचानक प्रवेश करती है लेकिन अचानक उसके जीवन से चली भी जाती है । केसरी जीता है मात्र स्वयं के लिए ही । `किसी की भी इच्छा के अनुकूल अपने को नहीं ढाल पाता ।मुझे लगता है मैं केवल अपने ही लिए जिता हूँ ।`[३] उसके अंतर की उदासीनता बाहर की उदासीनता में बदल जाती है । सब के बीच घिरकर भी वह अकेला अनुभव करता है । केसरी के जीवन में पूर्णिमा,श्यामा,मनोहर,राधा,सरोज,मंजुला सभी आते है । पर इन सब से घिरकर भी उसका जीवन निर्जन,एकांत और लक्ष्यहीन-सा हो जाता है । केसरी कहीं भी स्थिर नहीं हो पाता । अच्छी नौकरी को भी बेकारी की मार सहते हुए छोड़ देता है । उसकी एक दोस्त सरोज केसरी से कहती है, `तुम्हारे लिए

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.६७ ।

२ - वही - पृ.६८ ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.७८ ।

जीवन मार्ग का निश्चय कर लेना उतना आसान नहीं, जितना और लोगों के लिए[1]। उसकी लक्ष्यहीन जिंदगी उसे स्वयं से भी काटकर अकेला बना देती है। उसकी अनिर्णय की स्थिति की प्रक्रिया में आधुनिकता स्पष्ट होती है। अकेलापन इस तरह आधुनिक जीवन में कचोटता जा रहा है जिससे मनुष्य की निर्णय शक्ति क्षीण होती चली जा रही है। भीतर-बाहर की उदासीनता में टूट रहे पुरुष का राकेश ने केसरी के व्यक्तित्व द्वारा 'दोराहा', 'धुंधले दीप', 'लक्ष्यहीन' इन तीन कहानियों के माध्यम से बड़ी सूक्ष्मता से चित्र उभारा है।

(१०) नारी-एक असफल आधुनिका ---

राकेश जी की 'मिस पाल' कहानी में मारबिडिटी (morbidity) (रुग्णता। विकृति) का बोध तो नहीं है, लेकिन परिवेश से कट जाने में आधुनिकता बोध है। अनेक आधुनिक नारियों में एक 'मिस पाल' भी है जो महानगरीय परिवेश में फालतू और जीवन की व्यर्थता के बोध से खिन्न है। बचपन में माता-पिता से प्यार न मिलने के कारण वह घर छोड़कर दिल्ली जैसे महानगर में नौकरी करती है। लेकिन आफिस के परिवेश से ऊबकर ऐसी जगह तलाश करना चाहती है, 'मैं ऐसी जगह रहना चाहती हूँ जहाँ यहाँ की-सी गन्दगी न हो और लोग इस तरह की छोटी हरकतें न करते हों। ठीक से जीने के लिए इन्सान को कम से कम इतना तो महसूस होना चाहिए कि उसके आसपास का वातावरण उजला और साफ है, और वह एक मेंढक की तरह गंदले पानी में नहीं जी रहा।'[2] लेकिन नई जगह के लोगों के बीच भी अकेलापन और अजनबीपन महसूस होता है। उसे अपना पालतू कुत्ता पिंकी उन लोगों से अच्छा लगता है। कहानी के रणजीत से मिस पाल कहती है "तुम इन्हें इन्सान समझते हो ? मुझे तो ऐसे लोगों से अपना पिंकी ज्यादा अच्छा लगता है। यह उन सबसे कहीं ज्यादा सभ्य है।'[3] लोगों की कुचेष्टा का शिकार मिस पाल की भद्दी मोटी आकृति कुछ हदतक

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ८४।

२ - वही -

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ. १३।

... SAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

जिम्मेदार है । उसको देखकर यह निर्णय कर पाना मुश्किल होता है कि वह औरत है या मर्द । यहाँ तक कि उसके बनाए चित्रों से भी इसका आभास मिलता है । क्योंकि वह हमेशा अपने चित्रों के लिए मोटी भद्दी और किल्लंग आकृतियाँ ही चुनती है । मिस पाल जीवन के क्षेत्र में ऐसी असफल आधुनिका है, जो अपने भीतर की घुटन और अवसाद से टूट रही है । उसकी जिंदगी बिखर सी गयी है । उसके इस जिंदगी के बिखरे पन में एक असफल व्यक्तित्व की आधुनिकता स्पष्ट होती है । अस्त व्यस्त जिंदगी उसे अजनबी अकेली बना देती है ।

(११) बिलगाव --

आधुनिकता के दौर में औपचारिकता ने व्यक्ति-व्यक्ति के बीच बिलगाव पैदा हो गया है । राकेश की 'खाली' कहानी आज के वास्तविक जीवन को चित्रित करती है । आधुनिक परिवार अपने भीतरी और बाहरी दुनिया से कटता और बटता चला जा रहा है, परिणामस्वरूप बिलगाव आता गया है । आधुनिक व्यक्ति अपनी जिंदगी से तंग आकर अपने परिवार के बीच में रहकर भी जैसी परायी दुनिया में रहता है । 'खाली' के तुषी और जुगल की वर्तमान जिंदगी अनेक समस्याओं से उलझाकर निरर्थक होकर रह गयी है । रोजमर्रा की जिंदगी ने दोनों को एक-दूसरे से काट दिया है यहाँ कि दोनों को एक दूसरे की उपस्थिति का अहसास तक उन्हें नहीं होता । वे अपने परिवेश से चिढ़ से गये है । उनके लिए कोई भी संबंध अर्थ नहीं रखता । 'जिंदगी की हर चीज उसकी नजर से किसी वजह से गलत थी ।'[१] जुगल अकेला होने के कारण दुनिया की गलत चीज को ठीक नहीं कर पाता । यहाँपर आधुनिकता व्यक्ति की असहायता में मुखर होती है । दुसरी तरफ तुषी जो शादी के पहले शोख और हंसमुख स्वभाव की थी, शादी के बाद घिसीपिटी जिंदगी से ऊबकर एकांत की तलाश में है । उसे यह जिंदगी अर्थहीन और गंधहीन-सी लगती है । वह जुगल की जिंदगी से निकलना चाहती है । जुगल की विवशता उसे और भी विवश करती है । जुगल की विवशता के बिलगाव

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ३० ।

में भी अन्दर ही अन्दर खंडित होकर रहने का प्रयास करती रहती हैं । `खाली` में सांकेतिकता की गहरी अनुभूति रहती हैं । कहानी में आधुनिकता पति-पत्नी के आधुनिक भाव-बोध का संकेत दे जाती हैं ।

(१२) अमर्यादित भोग एवं मुक्त समाज --

मोहन राकेश की `सेफ्टी पिन` कहानी अमर्यादित भोग एवं मुक्त समाज की आधुनिकता को मुखरित करती हैं । कहानी की शारदा अर्थात् मिसेज सक्सेना अपने उपन्यास की नायिकाओं का परिचय `स्लिम, स्मार्ट एण्ड प्रेटी`[१] से कराती हैं पर नैरेटर के दृष्टि में वह `सब ठिगने कद और भरे हुए जिस्म की गोरी गोरी औरतें`[२] मात्र हैं । नैरेटर को ऐसा लगना स्वाभाविक हैं क्योंकि शारदा की मध्यवर्गीय मानसिकता जिसमें प्रदर्शन, कृत्रिम व्यवहार, धनाढ्य दीखने की उद्यम, औपचारिकता व्यवहार एवं सस्ती ईर्ष्या की झलक मिलती हैं । बत्तीस वर्षीय उमा अपने पचास वर्षीय पति की हर बात बोरिंग पाती हैं क्योंकि उसने दुहाजू के साथ अपना तीसरा विवाह, उसकी जायदाद की खातिर रचाया हैं । रमेश खन्ना की पत्नी शीला मौका पाते ही कथानायक के साथ फ्लर्ट करने लगती हैं और उसे घर आने का निमंत्रण देती हुई कहती हैं `किसी भी दिन जब तुम्हें फुर्सत हो । रमेश नौ बजे चला आता हैं । मैं सारा दिन घर पर रहती हूँ ।`[३] मिसेज सक्सेना चन्दर से रोमांस लड़ाती हैं । वैवाहिक सम्बन्धों का यह विकृत जुलूस तथाकथित ऊँची सोसायटी की उपज हैं । पर यह सोसायटी तो मध्यमवर्गीय मानसिकता से ग्रस्त हैं । नैरेटर को `सेफ्टीपिन` की चुभन इस कहानी में ऐसी चुभन हैं जो उसे उच्चवर्गीय ढकोसले की याद दिलाती रहती हैं । इस कहानी में स्थितियों का दबाव अत्यंत सघन होकर व्यक्ति को तोड़ता चलता हैं । मुक्त समाज एवं व्यक्ति-व्यक्ति के बीच दूरी को कथाकार ने सही रूप में उभारा हैं ।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. २०० ।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. २०० ।

३ — वही — पृ. २०६ ।

(२) धार्मिकता के संदर्भ में आधुनिकता ---

आधुनिक युग में धार्मिकता का प्रभाव उतना नहीं रहा जितना प्राचीन काल में था । आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में मनुष्य ने विज्ञान को धर्म के विकल्प के रूप चुन लिया है । इसीकारण धर्मकल्पना के प्रभाव में कमी आने के कारण आस्थाहीनता को बढ़ावा मिला । रूढ़िवादी तत्वों के प्रति उदासीनता फैल गयी । व्यस्त जीवन के कारण धार्मिक कार्य मनुष्य नहीं कर पा रहा । इसी के परिणामस्वरूप धर्म आधुनिक युग में गतिहीन माना गया । व्यक्ति पुरातन मान्यताओं, रूढ़ियों और परम्पराओं को अस्वीकार कर रहा है । मोहन राकेश जी ने कुछ कहानियों में धर्माडम्बर पर करारा प्रहार किया है । धार्मिकता के संदर्भ में आधुनिकता को राकेश की दो-चार कहानियों में देखा जा सकता है ।

(१) धर्माडम्बर --

राकेश की ' जानवर और जानवर ' कहानी में धर्म के काले पक्ष पर व्यंग्य है । फादर पिन्शा का चरित्र काली सियाही से लिखा गया है । अनीता और मणि नानावती को फादर ने वासनापूर्ति का साधन बनाया है । जिससे धर्म के पवित्र पक्ष पर कालिख लग गयी है । जिस नारी से पादरी की वासनापूर्ति नहीं होती उसे वह अलग करता है । कहानी का जॉन कहता है, ' यह अपने को पादरी कहता है । सवेरे परमात्मा से संसार-भर का चरित्र सुधारने के लिए प्रार्थना करेगा और रात को .... हरामजादा ।'[१] व्यंग्य के छींटे इस कहानी में जान डालते हैं और ' जानवर ' का प्रतीक इसके अंशों को बिखरने नहीं देता है । अन्त में गिरजे की घंटियों का डिंग डांग मिशन के अहाते की सतही, नकली और खोखली जिंदगी को मुखरित करती है । यही पर आधुनिकता स्पष्ट होती है ।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ३६९ ।

(२) आस्थाहीनता --

राकेश जी ने `खंडहर` कहानी के माध्यम से धर्माडम्बर के प्रति करारा व्यंग्य किया हैं । इस कहानी में धार्मिक अंधविश्वासों और टकोसलों का पर्दाफाश कर दिया हैं । कहानी के पुजारी के चरित्र की गिरावट को इसमें दिखाया गया हैं । ईश्वर दर्शन इच्छुक लोगों के विभिन्न स्वभावों का चित्रण बखुबी इसमें किया हैं । `भगवान` मात्र दर्शन के लिए लोग मंदिर के यहाँ आते हैं । पुजारी ईश्वर दर्शन कराते हैं, लोग दर्शन लेते हैं और अपनी वास्तविक दुनिया में बड़े आराम से लौटते हैं । कहानी में ईश्वर के दर्शन के इच्छुक और पुजारी की भक्ति और चरित्रपर एक सशक्त व्यंग्य राकेश ने किया हैं । इसी आस्थाहीनता में आधुनिकता अभिव्यक्त होती हैं ।

(३) मानवीयता एवं नये मूल्यों की खोज --

आधुनिक युग में धार्मिक पुरातन मान्यताओं, रुढियों आदि को व्यक्ति नकार रहा हैं । वह अपनी तरह से,ढंग से जीना चाहता हैं न कि रुढियों के बंधन में जकड़कर । इसी कारण आदमी अपने जीने के लिए नैतिकता का चुनाव स्वतंत्र व्यक्तित्व और विवेक के साथ करता हैं । आज इसका स्वरुप आधुनिकता के बदलते स्वरुपों के साथ विकसित हो रहा हैं ।

आज का युवक किसी की परवाह किये बगैर ही विश्वास के साथ अपना चुनाव खुद करता हैं । उसके चयन में एक मानवीयता की गंध हैं । उसकी जीवनदृष्टि आधुनिक वैज्ञानिक ढंग की हैं । राकेश जी की `जंगला` कहानी पारिवारिक संघर्ष की कहानी होते हुए भी आधुनिक दृष्टि की कहानी हैं । कहानी नायक बिशना रुढियों से चिपके माता-पिता के खिलाफ एक विश्वास के साथ परित्यक्ता राधा से विवाह करता हैं । बिशना मानवीयता के सहारे राधा का इस दुनिया में साथ देना महत्वपूर्ण समझाता हैं । वह अपने इरादे के लिए माँ-बाप को त्यागकर राधा का वरण करता हैं । परम्परावादी माँ अपने बेटे बिशन और बहु राधा को घर से निकाल देते हैं । इसका एक मात्र कारण हैं राधा परित्यक्ता

नारी है । माँ बहु की इन शब्दों में भर्त्सना करती है ' बाप की बेटी है, तो इसके बाद न कभी खुद इस घर में कदम रखे, न उसे रखने दे ।' [1] बेटे-बहु के अभाव में माँ की ममता उबल पडती है । मातृत्व सम्झौतावादी दृष्टिकोण अपना लेता है । पिता का वात्सल्य पुत्र के प्रति झुकता है । माँ-बाप चाहते हैं कि उनका बेटा पुन: उनके पास आ जाय । माँ के शब्दों में ही ' मेरी तरफ से वह किसी को भी घर में ले आए । मैं यहाँ न पड रहूँगी, पीछे के कमरे में पड़ रहूँगी ।' [2] इस कहानी में आधुनिकता बिशन की जीवनदृष्टि में है ।

राकेश जी की एक और कहानी ' चाँदनी और स्याह दाग ' में नायक प्राचीन रूढियों को वैयक्तिक मूल्य के समक्ष तोड़ता है । यह कहानी वैयक्तिक निर्णय के अन्तसंघर्ष की कहानी है । नायक समद् सामाजिक रूढियों को छोड़कर कबाइलियों द्वारा लुटी गयी प्रेमिका मेहर को स्वीकार करने में हिचकिचाता नहीं । मेहर समद् को बताना चाहती है कि ' मैं वह मेहर नहीं हूँ, जिसे तू पाना चाहता है, इस जिन्दगी में । अब मैं वह मेहर हो भी नहीं सकती । मैं एक गला हुआ जिस्म हूँ और कुछ नहीं, जिसमें अब जहर ही जहर है ।..' [3] लेकिन समद् का पूरा विश्वास मेहर पर है । समद् का विश्वास ही मेहर को चाँदनी की तरह पाक और हसीन बना देता है । उसका स्वीकार का निर्णय मेहर के जहर भरे ओठ को चुम्बने में संकोच नहीं करता । समद् के स्व के निर्णय में आधुनिकता झलकती है । अंत में दोनों एक हो जाते हैं ।

कहानी नायक अत्यंत आधुनिक जीवन दृष्टि को लेकर चलनेवाला है । उसकी लड़ाई ,उसका निर्णय स्वयं उस का ही है । लेखक इस कहानी द्वारा नवयुवकों को नये युग का आव्हान स्वीकार करने का आव्हान दे रहा है ।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.१८७ ।

२ - वही - पृ.१९२ ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.४४६-४७ ।

डॉ. श्रीराम महाजन के अनुसार ' आधुनिकतावादी- भौतिकतावादी जीवन दृष्टि में ' काम ' और ' अर्थ ' ये दो ही पुरुषार्थ रह गये हैं । आधुनिक युग में ' काम ' और ' अर्थ ' प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुरूप ' धर्म ' से अनुशासित नहीं हैं और न ही उनकी दिशा मोक्ष की ओर है । युगीन जीवन-स्थितियों का दबाव और मनुष्य के स्वयं अनुशासन का अभाव कोरे ऐहिक सुखों के दलदल में मनुष्य को ले जा रहा है ।' [१]

(३) आर्थिकता के संदर्भ में आधुनिकता --

आधुनिकीकरण के द्वारा विकास को गति मिली । विकास एवं प्रगति की दौड़ में अभी ' और आगे ' की भावना रही, साथ ही मनुष्य के लिए आधुनिकता ने एक ऐसे ' ब्लैक होल ' का निर्माण किया है, जिसमें स्वयं वह घुट रहा है । वैज्ञानिक आस्था ने आधुनिक समाज के सम्मुख दो दृश्य खड़े कर दिये हैं । एक दृश्य है, पक्की सडकें , बस्तियाँ, ऊँचे-ऊँचे मकान,बाजार,मनोरंजन के साधन, बिजली के उपकरण,शिक्षा केन्द्र,राजनीतिक गतिविधियों के केन्द्र, तेज चलने वाले वाहन, अन्य शहर या देशों से संपर्क साधन, सुख-सुविधाओं की दुनिया, आदि यह आधुनिक नगरों की देन है । तो दूसरा दृश्य है,गंदी बस्तियाँ,मुँहतोड मँहगाई, बेकारी,संयुक्त परिवार में दरार, भूखमरी,बीमारी, असमान वितरण,गरीबी का नर्क, मानसिक तनाव, न सुलझानेवाली समस्याएँ, असुरक्षा ,अपराध-बोध,अकेलापन, आत्मघाती स्थितियाँ और आत्मपरायापन भी दिया है ।

अर्थ पर आधृत समाज की संरचना बन गयी है । किसी भी समाज का परिदृश्य मुख्यत: आर्थिक कारणों से ही संचालित होता है । अर्थ और अर्थ-व्यवस्था आज वह धुरी बन गयी, जिसके द्वारा समाज के व्यवहार,संबंध, रिश्ते आदि सभी कुछ निर्धारित होते हैं । मनुष्य की दृष्टि अर्थोन्मुख और अर्थ केन्द्रित होने का ही परिणाम है कि संयुक्त परिवारों में दरार पड़कर अलग-अलग छोटे-छोटे परिवार बन गये हैं । माता-पिता,भाई बहन,चाचा-भतीजे,पति-पत्नी आदि के संबंध तोये

---

१ आधुनिक हिन्दी कहानी - साहित्य में काममूलक संवेदना -
- डॉ.श्रीराम महाजन, - पृ. २५२ ।

जा रहे हैं । इन सब में अर्थ का विषधर कुंडली मारकर बैठ गया है । फलत: वर्तमान समय बेकारी और अर्थ-वितरण की अव्यवस्था आदमी को व्यर्थ, असहाय और अजनबी बना चुकी है । राकेश जी की कहानियों में आर्थिक तनाव और अर्थाश्रित विवशताओं का चित्रण मिलता है । अर्थ के संकट के कारण जिन्दगी का दोहरापन उनकी कहानियों में प्रखरता से मिलता है । आर्थिकता के संदर्भ में आधुनिकता उनकी अधिकांश कहानियों में देखी जा सकती है ।

(१) आर्थिक विवशता एवं जिंदगी का दुहरापन --

आर्थिक विवशता ने जिंदगी के दुहरेपन को निभाने के लिए मनुष्य को मजबूर कर दिया है । राकेश जी की `मरुस्थल` कहानी के इन्दु-सकीना धनपत राय एवं `मैं` की नियति भटकने में है । कहानी के सभी पात्र भटकते हैं । वे सभी बेचैन तथा तनाव की स्थिति में हैं । जिसका मूल है `अर्थ` । रेगिस्तान से भी रूखा एक और भी मरुस्थल है "[१] जो इन्दु, नसीम, सकीना, धनपतराय और `मैं` के जीवन में फैला हुआ है । सभी कहीं न कहीं आर्थिक संकट से गुजर रहे हैं । आधुनिकता कहानी में पात्रों की बेचैनी, तनाव और छटपटाहट में जाकर उजागर होती है । वे सभी जिंदगी को दुहरेपने में जीना पसंद करते हैं ।

`लड़ाई` कहानी का `वह` बार-बार बेकारी का सामना करते ऊब गया है । भटकती में वह निश्चित जगह ढूँढ नहीं पाता । रेल्वे स्टेशन पर एंजिन की ओर देखकर उसे लगता है कि `एंजिन, जिसने अन्ना करेनिना को कुचल दिया था, जैसे आज वह उसे भी एक तरह का निमन्त्रण दे रहा हो ।[२]` `वह` को जीवन में आर्थिक विवशता ने इतना खोखला कर दिया है कि वह जिंदा रहते हुए भी ट्रेन के पहियों में कुचल दिया गया हो । `वह` के ऊब भरी जिंदगी में आधुनिकता का संकेत मिलता है ।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ९६ ।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ४६१ ।

'एक घटना' यह कहानी से ज्यादा एक जीवंत लेखक की 'चिंता' है कि वह किसी तरह चिंताओं में एक वक्त घिरा रहा है। कहानी की 'निलिमा' अर्थ के अभाव में बहुत बड़ी विदुषी न बनकर अनपढ बन जाती है। अपने पिता की मृत्यु के बाद जीवन का सामना करने के लिए पिता की बहुमोल किताबें नगण्य कीमत पर बेचने के लिए विवश होती है। निलिमा कहानी के 'मैं' से कहती है 'इससे अधिक तो नहीं मिल सकता था न, चाचाजी ?'[१] अर्थ का अभाव जीवन में इतना घर कर जाता है कि कहानी का 'मैं' उस घर से 'अतिपरिचित' होते हुए भी 'अपरिचितता' ही अनुभव करता है। 'मैं' आर्थिक अभाव में उस घर को सहानुभूति के अलावा और कुछ नहीं दे सकता।

'भूखे' कहानी की एवलिन आर्थिक संकट के तनाव में जीती है। पति के मृत्यु के पश्चात उसे निरंतर आर्थिक संकट से गुजरना पड़ता है। अपने पति के इलाज के लिए सब कुछ बेच देती है। घर का काम, पति,बच्चे की देखभाल स्वयं करती है। इस पर कहानी में एक टिप्पणी है 'फिर लोग कहते है कि जिन्दगी में पैसा ही सब कुछ है। क्या चीज है पैसा ? इन्सान की भूख पैसे से नहीं मिटती, प्यार से मिटती है।'[२] यह बात सच भी हो तो भी पति की मृत्यू के पश्चात उसे आर्थिक विवशता में जीना पड़ता है। एवलिन के पास उसके पति के बनाये हुई कई चित्र है, पर उन्हें कोई खरीदना नहीं चाहता। शिमला में लोग खरीदना चाहते है, एवलिन का शरीर। लोग उस पर फब्तियाँ कसते है, उसका मजाक उडाते है। एवलिन और उसका बच्चा दोनों अभावग्रस्त है। यहाँ एवलिन अभावग्रस्त तो है, पर भूखे है तथाकथित वे सभ्य लोग जो एवलिन को खरीदना चाहते है। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण एवलिन को नैतिक एवं सामाजिक संकट भी झेलने पड़ते है। इस कहानी में आधुनिकता एवलिन की निर्वासित और तनावपूर्ण जिंदगी में जाकर उभरती है और एवलिन की व्यर्थता में जाकर स्पष्ट होती है।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.४५१।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.१०४।

(२) अर्थ का अभाव तथा संकट ---

राकेश जी की कहानी `आद्रा` में माँ की ममता व्यर्थता में बदल जाती है। माँ का व्यक्तित्व दो बेटों के बीच विभाजित हो गया है। बड़े बेटे की संपत्ति के बीच वह व्यर्थता और अजनबी के बोध से पीड़ित है तो दूसरी तरफ बेकार बेटे के पास रहकर अर्थ संकट के घुटन से टूट रही है।

`वारिस` कहानी में आर्थिक संकट के तनाव का तानाबाना बना हुआ है। सभी पात्र अर्थ संकट झेल रहे है। ट्युशन समाप्त होने की संभावना में `वारिस` के मास्टर साहब एकांत पहाड़ की खोज करते है। कहानी में आर्थिक संकट के कारण फालतू और अकेला होने के बोध में आधुनिक भावबोध की गहराई मिलती है।

`खाली` कहानी भी `वारिस` की तरह आर्थिक संकट झेल रहे मध्यवर्गीय परिवार की है। पैसे के लिए कहानी का युवक जुगल सुबह से शामतक दफ्तर के कागजातों में उलझा रहता है। डूबते सूर्य के साथ वह भी घर में आकर अस्त होती जिंदगी को महसूस करता है। जुगल पत्नी और बच्चों के बीच आकर भी `न होने` की स्थिति से टकराता है। वह अपने रोजमर्रा की घिसीपिटी जिंदगी से ऊब गया है। परिवार की आर्थिक विवशता ने पति-पत्नी को बाहर की दुनियाँ से काटकर रख दिया है। पति-पत्नी दोनों अंदर की टूटती चीजों का एहसास करते है जिसके मूल में एकमात्र बोझ अर्थ है। कहानी में आर्थिक यंत्रणा की विवशता एवं जिंदगी के दुहरेपन में आधुनिकता का सांकेतिक रूप मिलता है।

(३) अर्थ से उत्पन्न घुटन और छटपटाहट ---

आदमी के अंदर जो तनाव है, उसके मूल में है `अर्थ`। आर्थिक अभाव का संकट जीवन में दिन ब दिन जटिल से जटिल होता जा रहा है। सत्य यह भी है कि मध्य स्तर पर जीनेवाले लोग महानगरी परिवेश में संभ्रांत बनने का असफल प्रयास करते है जिससे उन्हे घुटन ही मिलती है।

राकेश जी की 'पाँचवे माले का फ्लैट' कहानी में आर्थिक संकट से उत्पन्न घुटन को झेल रहे आधुनिक व्यक्ति को चित्रित किया हैं। कहानी नायक अविनाश समाज में प्रतिष्ठा पाने के लिए अपनी जेब में दो-एक चारमिनार सिगरेट रखता हैं और उसके लिए पैंट का क्रीज ठीक रखना अनिवार्य हैं। वह पैसे के अभाव में सरला और प्रमिला से भी नहीं बंध पाता और उसकी स्थिति यहाँ तक की वह स्वयं से भी नहीं जुड़ पाता। अर्थ के अभाव ने उसे 'पाँचवे माले के फ्लैट' से अवश्य जोड़ दिया हैं। क्योंकि अविनाश 'अपने को और अपने कमरे को देखता रहता हैं।'[१] वह उस फ्लैट में जी तो रहा हैं पर जिंदगी बिखरी हुई हैं। बिखरी हुई जिंदगी अभाव-ग्रस्ता के कारण हैं। वह इससे उत्पन्न घुटन से निकलने की असफल छटपटाहट में हैं। यहाँ परिवेश से कट कर जीने में और कहानी की यथार्थता में आधुनिकता गहरी हैं। महानगरबोध से जुड़ी इस कहानी की आधुनिकता और प्रखर हो उठी हैं।

'फटा हुआ जूता' कहानी भी अर्थ से उत्पन्न घुटन को मुखरित करती हैं। कहानी के राय का पैसे के अभाव में 'फटा हुआ जुता' ही संपत्ति और नियति बन जाता हैं। राय 'उन व्यक्तियों में से था जो ईश्वर की प्रयोगशाला से अकेले ही बनकर आते हैं।'[२] राय का जीवन खेली हुई ताश की तरह पिसा हुआ हैं। किसी भी चीज की प्रतिक्षा उसके जीवन में अहम बन गयी हैं। 'रोज उसे कहीं न कहीं किसी न किसी चीज के लिए प्रतिक्षा करनी पड़ती थी।'[३] राय पुरस्कार में प्राप्त तीस रुपयों में सफेद ब्राऊन जूता, बरसाती, कोट, मोजा, सिगरेट केस, रंगीन कुर्सियाँ और जैनी डिसूजा सब कुछ पाना चाहता हैं। पर उसकी तमाम इच्छाएँ फटे हुए जुते की 'तपट् तपट् तपट्'[४] की आवाज में उलझकर

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. २६९।

२ - वही - पृ. ३५०।

३ - वही - पृ. ३५१।

४ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ. ३५८।

रह जाती है । कमरे में बसी गंध उसके जीवन में उमस और बेचैनी पैदा करती है जिससे जीवन में घुटन महसूस करता है । अत: आधुनिकता नगरबोध की आर्थिक घुटन से जुड़ कर ऊब और निरस्ता में स्पष्ट होती है ।

इस कहानी में आज की पीढ़ी की विभ्रांत अवस्था, घुटन, कुण्ठा, आर्थिक विषमताओं की सूक्ष्म प्रतीकात्मकता की अभिव्यक्ति हुई है ।

महानगर के परिवेश में साँस ले रहे मध्यम वर्ग के लोग जल्द से जल्द संभ्रांत वर्ग का हिस्सा बनने की चाह रखते हैं । यह उनकी महत्वाकांक्षा ही उनके अर्थोपार्जन के लिए तरह तरह के आयाम खोज निकालती है । राकेश की कहानी ' मिस्टर भाटिया ' का मिस्टर भाटिया से के.सी.भाटिया एस्क्वायर बनना चाहता है । मिस्टर भाटिया कहानी के ' मैं ' से अपनी महत्वाकांक्षा का वर्णन करता है, ' साल-भर में हमारा फ्लोर्ट में दफ्तर खुल जाएगा । चार-चार चपरासी होंगे और एंग्लो-इंडियन लडकियाँ टायपिस्ट होंगी । बाहर बोर्ड लगा होगा - के.सी.भाटिया, एस्क्वायर । ताज में डांस हुआ करेंगे और क्रिकेट क्लब में डिनर[१]। ' लेकिन यह सब ' पहली तारीख को ।'[२] लेकिन उसके जीवन में ' पहली तारीख ' कभी आती ही नहीं और आती भी है तो उसकी इच्छाओं को कुचलती हुयी चली जाती है । बड़ा आदमी बनने की महत्वाकांक्षा ही उसे आत्मनिर्वासन के बोध से पीड़ित करती है । कहानी में आधुनिकता ताज होटल और क्रिकेट क्लब से चलकर मात्र भाटिया रह जाने तक की विडम्बना में उभरती है ।

' मंदी ' कहानी में सीजन समाप्त होने के बाद की पहाड़ी जीवन की आर्थिक विपन्नता का चित्रण किया है । कहानी के सभी पात्र आर्थिक संकट के कारण उत्पन्न घुटन एवं उससे निकलने की छटपटाहट में व्यस्त हैं । जो अपने लिए या दूसरों के लिए अवश्य जीते है, वे स्वयं से नहीं तो घुमने आये ' मैं ' से अवश्य

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.३४१ ।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.३४६ ।

जुड़ जाते हैं । क्योंकि पहाड़ी इलाके में तफरीह के लिए आये लोगों से ही उनकी रोजी-रोटी चलती है । कहानी का बूढ़ा व्यक्ति जी रहा है सिर्फ इसलिए कि ` जहाँ का अन्न-जल लिखाकर लाए थे, वहीं तो न रहेंगे .. अन्न-जल चाहे न मिले ।`[1] होटलवाला अपने लिए नहीं पर ` मैं ` के लिए मुर्गा बनाने की नियति में जा रहा है । कोयलावाली पैसे के लिए अपने छोटे भाई को ` मैं ` के पास रखना चाहती है । आर्थिक विपन्नता से त्रस्त बुढ्ढा अपनी स्थिति में एक प्याली चायकी तलाश में जिंदा है । ` वह आदमी चाय की प्याली ग्राहक भेजने के बदले में पीने जा रहा है ।`[2] उसकी यह स्थिति असंगति एवं पतालस्तू होते जाने के बोध से है । इस कहानी मेंआधुनिकता असंगति एवं आर्थिक घुटन के स्थिति में मुखरित होती है ।

(४) अर्थ के कारण उत्पन्न जिंदगी का संघर्ष ---

आर्थिक विवशता के कारण उठ रहे रोजमर्रा के जीवन संघर्षों को राकेश ने अपनी कहानियों में लिखा है । ` उलझाते धागे ` निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक विषाम्रता के तनाव की कहानी है । ` मंदी ` की तरह इस कहानी का परिवेश पहाड़ी इलाका है । मजदूर शिमला की ठण्डी रात में भी रिक्शा खींचते हैं । इन लोगों के ` कभी कभी तो पैर बरफ से सुन्न हो जाते हैं, नीचे से पैर में पत्थर गड़ते हैं, एक-एक कदम उठाना मुश्किल हो जाता है, फिर भी रिक्शा लिए भागते रहते हैं ।`[3] क्योंकि रोज रोटी का मामला है, काम नहीं करेंगे तो खाना कहाँ से खायेंगे । वे आदमी न होकर पेट के लिए अर्द्ध जानवर जैसी जिंदगी व्यतित करते हैं । इन मजदूरों की नियति मानो ` मेम का रिक्सा ` खींचने में है । इनकी जिंदगी देखकर मन में यह प्रश्न उठता है कि इनकी भी क्या जिंदगी है ? पर इस का समाधान कहानी में नहीं है । कहानी की आधुनिकता

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ३१६ ।

२ - वही - पृ. ३२१ ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ. ४०२ ।

प्रश्न उठाने में हैं उसके समाधान में नहीं ।

मोहन राकेश की ऐसी कहानियों में रोजमर्रा की जिंदगी के संघर्ष एवं उसी में जीने की विवशता का विश्लेषण मिलता है । वर्तमान आदमी आर्थिक विषमता और विपन्नता के कारण अपने को कहीं भी हिस्सेदार नहीं समझता, न तो सामाजिक दुनियाँ में, पारिवारिक दुनियाँ में न तो स्वयं की वैयक्तिक दुनियाँ में । हर तरफ से वह कट चुका है ।

(५) आर्थिक विवशता में नारीत्व नष्ट --

भारतीय समाज में जो नारी-जागरण उन्नीसवी शती से प्रारम्भ हुआ था उसे बीसवीं शती में विकास मिला । परिणामत: शिक्षा प्राप्त कर नारी सामाजिक राजनीतिक जीवन में आगे बढ़ी । स्वतन्त्रता के बाद भारतीय नैतिक मूल्यों में जो परिवर्तन हुआ उसने नारी को भी आंदोलित किया । आजादी के बाद भारतीय नारी के अधिकारों की माँग बढ़ी । पर इसी के साथ उसके अपने तनाव और दु:ख-दर्द भी बढ़े । आज के व्यक्ति ने आर्थिक हित के लिए नैतिक और चारित्रिक मूल्यों को नकारा है । आर्थिक संकट से त्रस्त नारी घर की हालत सुधारने के लिए और परिवार का स्तर ऊँचा उठाने के लिए घर की चौखट से बाहर कदम रखकर नौकरी करने लगी है । नौकरी की तलाश में उसे अपने अस्मत का सौदा तक करना पड़ा ।

मोहन राकेश की 'जानवर और जानवर' कहानी में इसी को मुखरित किया है । इस कहानी में मणि और अनिता मुखर्जी आर्थिक कमजोरी के कारण ही पादरी की कामना का शिकार बनते हैं । अनिता मुखर्जी मैट्रन बनने के लिए पादरी की वासना का शिकार बनती है । वह घर में अकेली कमाऊ लड़की है । घर की हालत को सुधारने के लिए घर से इतनी दूर नौकरी करती है । उसका मैट्रन बनने के लिए किया हुआ समझौता पीटर और जॉन के बीच उसे अजनबी बना देता है । नई मैट्रन बनने की विवशता ही अनिता को शाल में सिकोड़ देती है । शाल भी उसकी विवशता को छिपा नहीं पाता और 'एक किस्म मिसेज मफर्ती

को आंख से इशारा करके`[१] मुस्करा देता है । अनिता की आर्थिक विवशता में आधुनिकता अपना रंग दिखाती है ।

आर्थिक विपन्नता ने ही भाई-बहन,पति-पत्नी ,बाप-बेटी के रिश्ते को छिन्न-भिन्न कर दिया है । आज नौकरी में तरक्की पाने के लिए, आर्थिक लाभ के लिए और संभ्रान्त वर्ग में जाने के लिए उत्सुक पुरुष पत्नी,बेटी और बहिन को बाजार में लाने से कतराता नहीं है ।

` मरुस्थल ` कहानी का धनपत राय लखपति बनने के लोभ में अपनी बेटी इन्दु को डॉक्टर बनाने की अपेक्षा - बाजार की सजी-सजाई गुड़िया बना देता है । इन्दु नृत्य को जानती है लेकिन उसने लोगों से इनाम लेने के लिए नाचना नहीं सिखा है । वह कहती है ` हमने लोगों से इनाम लेने के लिए थोड़े ही नाचना सिखा है ? `[२] लेकिन उसका बाप धनपतराय उसकी कला का बाजार में मूल्य लगाता है । ` वह इन्दु का इस तरह बखान करने लगा जैसे एक जीवित बच्ची नहीं, एक पुतली की बात कर रहा हो । `[३] इन्दु की माँ को घरसे इसलिए निकालता है कि उसकी कमाई के दिन निकल गये हैं । धनपतराय की आर्थिक हालत कमजोर होनेपर उसे इन्दु में पैसा ही पैसा नजर आता है । कहानी के अन्दर पैसे के लिए निरर्थक होते सम्बन्धों का चित्रण हुआ है । बाप-बेटी और पत्नी से जुड़ नहीं पाता और पत्नी पतिसे न जुड़कर किसी और से जुड़ने के लिए छटपटाती है । धनपतराय भी लखपति बनने के अभाव में पत्नी,बेटी से न जुड़कर शराब में डूब जाता है । इस कहानी मेंआधुनिकता इन्दु की छटपटाती हुई जिंदगी ,माँ (सकीना) की घुटती हुई जिंदगी और धनपतराय की शराब में डूबी हुई जिंदगी में जाकर उभरती है ।

` हक्कहलाल ` कहानी के पण्डित जी चालीस के आसपास के हैं । उनकी पत्नी जो आयु में काफी छोटी है, घर से भाग जाती है । तब वे डरा-धमकाकर

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.३७८ ।

२ - वही - पृ.१०१ ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.१०० ।

अपनी साली को घर ले आते हैं । पंडितजी ने पत्नी डेढ़ सौ रुपये में खरीदी थी । कहते हैं ' बड़ी बहन सौ रुपये में मिल सकती थी । पर यह जरा खूब सूरत थी । उम्र छोटी थी, पर मैंने सोचा कि इसकी कोई बात नहीं ।'[1] कहानी का बुड्ढा अपनी जवान और खूबसूरत लड़कियों को वृध्द अखबारवाले के हाथ बेचता है । वह आर्थिक विषमता के कारण अपनी लड़कियों की शादी नहीं कर सकता पर उन्हें बेचकर अर्थ को अर्जित करता है । कहानी में मध्यवर्गीय परिवार में होनेवाले सामाजिक अन्यायों का वर्णन हुआ है । आर्थिक कठिनाई के कारण एक तरफ बुड्ढा कराह रहा है और दूसरी ओर उसकी बेटी वृध्द पंडित के साथ रहकर ऊब और घुटन से निर्वासित हो रही है । वे दोनों बहनें वृध्द पंडित के पास रहकर भी उससे जुड़ नहीं पाती । कहानी में आधुनिकता बुड्ढे की घुटन और दोनों लड़कियों की मजबूरी में जाकर स्पष्ट होती है । ' हक्कलाल ' के पात्र व्यर्थता में कराहते, छटपटाते हैं पर मूक हैं । कहानी के अंदर उनका मौन रूप ही सब कुछ कहने में समर्थ हुआ है ।

' रोजगार ' कहानी में मिस दारूवाला को अपने रोगी भाई जमशेद के इलाज के लिए और अपनी रोजी रोटी के लिए ' कालगर्ल ' बनना पड़ता है । आर्थिक मुनाफे के लिए होटल की मालकिन मिसेज एडवर्ड को मिस दारूवाला जैसी लड़कियों की आवश्यकता पड़ती है । मिस दारूवाला को पैसे कमाने के लिए अपने जिस्म को बेचना पड़ता है । उसकी मजबूरी उसे मिसेज एडवर्ड के होटल में खींच लाती है । ' जब तब पाँचवी मंजिल के किसी कमरे के लिए उसकी जरूरत पड़ जाती थी और वह हरबससिंह टैक्सी-ड्राइवर को भेजकर उसे बुलवा लिया करती थी ।'[2] उसकी विवशता उसे जमशेद की बहन न बनाकर मात्र ' टैक्सी '[3][4] बनाकर रख देती है । आर्थिक कमजोरी के कारण एक तरफ बेकार भाई निर्वासित होकर घुट रहा है तो दूसरी तरफ बहिन अपनी मजबूरी और भाई का पेट पालने के लिए अस्मत

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ -- पृ. ३६३ ।

२ - वही - पृ. ३०० ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ. २९७ ।

बेचने को मजबूर होती हैं । पैसे के अभाव के कारण मर्यादापूर्ण सम्बन्ध डिग गये हैं । लेकिन मिस दारनवाला कहीं भी किसी से न जुड़ कर भाई से अवश्य बंध गयी हैं । ऑपरेशन के पश्चात होटल में भाई को न पाकर उसका मन चित्कार उठता है । भाई के अभाव में वह अपने आप को टूटा-सा महसूस करती हैं । होटल से निकलकर बसस्टैण्ड के पास खड़ी होकर निरुद्देश्य देर तक जड़-सी अपनी जगह पर खड़ी रही और इधर से उधर और उधर से इधर देखती रही ।[1] 'राजगार' कहानी में आधुनिकता आत्मिय रिश्ते की टकराव में अभिव्यक्त होती हैं ।

'सोया हुआ शहर' में भी निम्नमध्यवर्गीय लड़कियों के अस्मत के व्यापर का यथार्थ चित्रण हुआ हैं । जो आज के संदर्भ में यथार्थ और सम्भव हैं । कहानी की लड़की अपने शरीर का सौदा अर्थ के स्तरपर करती हैं । इसका बीभत्स रुप आज नगर और महानगरों में देखने को मिलता हैं । लोगों को बात की खाल निकालने का शौक रहता हैं । 'कुरुक्षेत्र से आना था, तो इतनी रात को ही आना था उसे ?'[2] लड़की की मजबूरी की ओर किसी का ध्यान तक नहीं जाता। अत: कहानी महानगर के परिवेश से जुड़ी हुई हैं । कहानी के अंदर रात्री में लड़कियों की तिजारत करनेवालों का पर्दाफाश किया हैं । लेखक ने बड़ी सूक्ष्मता से नगर और महानगर में हो रही चरित्र हीनता और अस्मत के सौदे का रेखांकन किया हैं । लेखक अति सत्य कहने में संकोच करने का असफल प्रयत्न करता हैं । उसी परिवेश में जीता हैं इसीलिए शायद उसे सफल नहीं बना सकता । दिन के उजाले मे शरीफों की तरह जीनेवाले रात में काले धंधे के लिए जागते हैं और कुत्ते की तरह भौंकते हैं । शहर सो रहा हैं पर इंसान के रुप में अर्थलोलुप कुत्ते जाग रहे हैं । 'मोड के कोने से दुब का कुत्ता अब दौड़ता हुआ इस तरफ बढ आता हैं । शेड के पास अन्दर बैठे आदमी को देखता हैं और भौंकने लगता हैं ।'[3] कहानी में

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.३०४ ।

२ - वही - पृ.३१४ ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.३११ ।

पात्र जिंदगी नाले के कीड़े-मकोड़े की तरह जीते हैं । इन संपूर्ण परिस्थितियों के मूल में हैं ` अर्थ ` । कहानी में आधुनिकता आर्थिक विवशता, महानगर की यांत्रिकता में व्यक्त होती है ।

` गुनाह बेलज्जत ` कहानी में हरजीत कौर नाबालिग लड़कियों से देह का सौदा करवाती है । पैसे के अभाव में अर्द्ध शिक्षित लड़कियाँ शर्मो और सुंदरी अस्मत बेचने के लिए मजबूर होती हैं । कहानी का सुन्दर सिंह एक सामान्य आदमी की तरह वेश्यागमन के बाद अपनी खाल बचाने के लिए मन ही मन सोचता है, ` बुनियादी तौर पर वह एक नेक और शरीफ आदमी था, और उसका दिल कह रहा था कि उस जैसे नेक और शरीफ आदमी को कभी हथकड़ी नहीं लग सकती ।`[1] दूसरी तरफ कहानी में अप्रत्यक्ष ढंग से पति-पत्नी के टूटते रिश्ते भी मिलते हैं । सुंदर सिंह पैसे के लिए पत्नी से जुड़ता है और उससे आत्मियता पाने का प्रयत्न करता है । लेकिन वह अन्तरिक रूप से सुंदरी वेश्या से जुड़ने का असफल प्रयत्न करता है । लेखक ने नगर-महानगर में हो रहे लड़कियों के शरीर व्यापार का यथार्थ चित्रिण किया है । इस प्रकार कहानी में आधुनिकता अवैध वेश्यावृत्ति को लेकर उभरती है । कहानी नायक गुनाह तो करता है और कल्पना के अंदर ही अंदर अपने पौरुषता की सुरक्षा चाहकर भी पंगु और अपाहिज दिखाई देता है ।

` आखिरी सामान ` कहानी का प्रति अपनी पत्नी का सौदा स्वयं करना चाहता है । मिस्टर भंडारी पदोन्नती के लिए अपनी पत्नी को अफसर का शिकार बनाना चाहता है । पर बेला उनका कहना नहीं मानती । तब अधिकारी खफा होकर मिस्टर भंडारी को जेल में बंद करवाता है । उसकी रिहायी के लिए बेला घर-बार और सब सामान बेचती है । यहाँ तक स्वयं को भी । पत्नी के रूप में बेला विरोध से समझौता करते हुए भी अंतत: निराशा की स्थिति में सीढ़ी उतरती हुई स्पंदनहीन सामान के रूप में स्वीकार करती है । ` सीढ़ियाँ उतरते हुए

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ३५२ ।

उन्हें लगा, जैसे वे आप नहीं उतर रहीं, घर का आखिरी सामान नीचे पहुँचाया जा रहा है ।`[१] इन सारी परिस्थितियों के मूल में पैसा है । कहानी में आधुनिकता आर्थिकता से लेकर संवेदनात्मक स्तर पर जाकर उभरती है ।

`वासना की छाया में` कहानी में आर्थिक विवशता में नारी को एक मात्र भोग्या का रूप दिया है । कहानी का बूढ़ा अपनी बेटी की शादी करने के बहाने अपनी वासना पूर्ति की सामग्री भी जुटाना चाहता है । वह कहता है -- `हमारे में यह रिवाज है, बाबूजी । बराबर का रिश्ता हो तो दो घर आपस में लड़कियाँ बदल लेते हैं । मैं जाकर अपने जैसा ही कोई घर देखूँगा ।`[२] अपनी बेटी की बलि देकर वह अपनी प्यास बुझाना चाहता है । वह बूढ़ा जाट पैसे के बल पर युवा गर्म मांस की तलाश में लार टपकाता घूम रहा है । नैरेटर को बूढ़ा कहता है `मुझे औरत के गर्म मांस की जरूरत है,बाबूजी ।..... मेरी अपनी हड्डियों पर गर्म मांस नहीं रहा, पर बूढ़ी हड्डियां गर्म मांस का चारा अब भी मांगती है ।`[३] कहानी में वासना कीप्यास बुझाने के लिए पैसा और बेटी दांव पर लगानेवाला जाट की अमानवीयता के स्तर पर जाकर आधुनिकता उभरती है ।

मोहन राकेश जी की `आखिरी सामान`, `सोया हुआ शहर`, `हक्कलाल`, `मरुस्थल`, `रोजगार`, `सुहागिनें` आदि कहानियों में नारी और कुछ नहीं मेज,कुर्सी की तरह एक उपयोगी वस्तु मात्र है जिसे पुरुष कभी भी अपने फायदे के लिए बेच सकता है । राकेश की कहानियों में आर्थिक समस्याओं में जूझते,टूटते ,निर्वासित और अजनबी होते मध्यवर्गीय तथा निम्नमध्यवर्गीय परिवारों के जीवन सत्य का उद्घाटन मिलता है । इन कहानियों की आधुनिकता

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.१७९ ।

२ - वही - पृ.२२३ ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.२२२ ।

आर्थिक तनाव से उत्पन्न अर्थाश्रित विवशता, निर्वासित एवं तनावपूर्ण जिंदगी अर्थ का अभाव तथा संकट, रोजमर्रा के जीवन के संघर्ष, नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों का अर्थ के कारण अस्वीकार, कमाईपन में उलझी नारी, पैसे के लिए जिस्म बेचती स्त्री, माँ - बेटी को, पति-पत्नी को, अर्धशिक्षित लड़की को बेचने से उत्पन्न आर्थिक विवशता एवं जिंदगी के दुहरेपन में प्रकट होती है ।

(४) राजनीतिकता के संदर्भ में आधुनिकता --

पाश्चात देशों के साथ ही जनवादी देशों में मनुष्य का नवीनीकरण हुआ है । हमारे देश की चिंता, चुनने की प्रक्रिया की चिंता रही है । ' नई - संभावनाओं की खोज ' शीर्षकांतर्गत मोहन राकेश जी लिखते हैं, ' टूटनेवाली इमारतों में एक इमारत उन विश्वासों की थी, जिन्होंने बहुत दिनों तक हमारे साहित्यिक सृजन को प्रेरित किया था । विभाजन हुआ । .... रोजमर्रा के जीवन का व्यवहार बदला, मान्यताएँ, बदलो, आपस के संबंध बदले । पर जिंदगी के पुराने ढाँचे में रची-बसी आंखे परेशान होकर देखती रही, और कोई प्रतिक्रिया उनमें नहीं हुई । इसलिए पहले जिन आँखों में कुछ सवाल जगने लगे, वे आँखे बिलकुल नई थीं । साहित्य में एक नये युग की शुरुआत तबतक नहीं होती जब तक कि उस युग की चेतना किन्हीं विश्वासों या अविश्वासों में परिणत नहीं होती । इस निर्माण की सतह के नीचे से इन्सान का जो रूप सामने आया, वह बहुत ही विकृत था, हालांकि अपरिचित वह नहीं था । लगा कि आस-पास के बड़े-बड़े परिवर्तनों के साये में हम लोग निरंतर पहले से छोटे और कमीने होते जा रहे हैं, हमारी नैतिकता की जो भी तथाकथित मर्यादाएँ थीं, वे टूट रही हैं, जिंदगी का सारा ' अदरूनी ढाँचा भुर-भुरी मिट्टी की तरह ढहता जा रहा है ।'[१]

भारत की सामाजिक एवं राजनीतिक दशा इस कदर बदतर है कि बहुसंख्यक गरीब लोग जिंदा लाश की तरह हो गये हैं । वर्तमान समय में असंगति

---

१ हिंदी कहानी : पहचान और परख - इन्द्रनाथ मदान - पृ. ३१, ३३ ।

इतनी भर गयी है कि व्यक्ति सिर्फ व्यर्थ जीवन ही ग्रहण करने के लिए मजबूर है । आज जहाँ देखो वहाँ संघर्ष, विग्रह, विक्षोभ, संत्रास, अशांति ही फैली हुई है । सभी जीवन में असंतुष्ट एवं अभाव का अनुभव करने लगे है । इस बुरी प्रक्रिया को देखते हुए राकेश ने स्वातंत्र्योत्तर राजनीतिक संघर्ष और व्यवस्था से उत्पन्न स्थितियों का चित्रण कहानियों में किया है । आज ऐसे भी व्यक्ति है जो पदोन्नति के लिए पत्नी को मुर्गी की तरह इस्तेमाल करने में हिचकिचाते नहीं । यहाँ तक कि नौकरी के लिए जमीर तक गिरवी रख छोडते है । उपभोग के लिए अनैतिक राह चुनना, आज की नियति बन चुकी है । दुसरी ओर राजनीतिक व्यवस्था की कचोट जिसने व्यक्ति को असहाय और अपंग बना दिया है । इसतरह भ्रष्टाचार ऊपर से नीचे तक फैल गया है । जिसमें मध्यमवर्गीय व्यक्ति पिसता चला जा रहा है । वह शिक्षित एवं योग्य होने के बावजुद भी ऊँची सिफारिश के अभाव में बेकारी झेल रहा है । 'परमात्मा का कुत्ता', 'जानवर और जानवर', 'ठहरा हुआ चाकु', 'फौलाद का आकाश', 'क्लेम', 'आखिरी सामान', 'जख्म' कहानियों में राकेश ने राजनीतिक भ्रष्टाचार को विश्लेषित किया है ।

(१) <u>मालिक - मजदूर संघर्ष - राजनैतिक व्यवस्था ---</u>

राकेश जी ने अपने परिवेश को बडी सच्चाई, ईमानदारी और अनुभूति के साथ कहानियों में चित्रित किया है । 'फौलाद का आकाश' मालिक और मजदूरों के संघर्ष की कहानी है । 'फौलाद की भट्टी चौबीसों घन्टे सुलगती रही थी ..... जब वह साथ आस-पास के आकाश को भी सुलगा देती थी ।'[१] श्रमिकों ने अपने रात दिन के परिश्रम से आकाश के रंग को ताम्बई रंग में बदल दिया था । जिसे देखनेसे लगता था कि जंगल में आग लग गई हो । लेकिन श्रमिकों के फ्लान्ट स्ट्राइक ने फौलाद की भट्टी की ताम्बई लौं को शांत और काला कर

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ११५ ।

दिया । मालिक मजदूर का समझौता लंबे और लेबर ऑफिसर की पत्नी मीनू पर अधिक निर्भर रहता है । मिनिस्टर राजकृष्ण से मीनू मिलती है तो यह संघर्ष टल सकता था । इसलिए रवि का सुझाव है, राजकृष्ण यहाँ आया है ' वह सरकिट हाऊस में ठहरा है । हो, सके, तो तुम किसी वक्त उसे फोन कर लेना ।'[१] इस कहानी में राजनैतिक व्यवस्थापर अप्रत्यक्ष रूप से एक करारा व्यंग्य लेखक ने किया है । आधुनिक परिवेश में यह कहानी आधुनिकता को लिए हुए है । इस कहानी में लेखक अन्याय, अत्याचार, शोषण और अमानवीय तत्वों के प्रति अत्यंत व्याकुल होकर झुंझलाता है ।

(२) नौकरशाही की अमानवीयता --

' परमात्मा का कुत्ता ' मोहन राकेश की एक अत्यंत सशक्त कहानी है । जिसमें विभाजन के पश्चात् देश में पनपने वाले भ्रष्टाचार एवं सरकारी अफसरों के अमानवीय व्यवहार का चित्रण है । एक बूढ़ा सरदार अपने भाई की विधवा, जवान बेटी और छोटे बेटे के साथ कमिश्नर साहब के आगे धरना दे बैठता है । ताकि उसे जो सौ मरला बंजर, गढ्ढोंवाली जमीन मिली है उसके बदले खेती करने योग्य जमीन मिल जाय । ऑफिस की फाइल उसकी एक मात्र पहचान है । वह कहता है ' मेरा नाम है बारह सौ छब्बीस बटा सात ।'[२] भूख से बिलबिलाते मरने की अपेक्षा सत्याग्रह करके मरने की नीयत से आया बूढ़ा सरदार कर्मचारियों से कहता है , ' तुम सब कुत्ते हो, और मैं भी कुत्ता हूँ । फर्क सिर्फ इतना है कि तुम लोग सरकार के कुत्ते हो - हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ से भौंकते हो । मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ । उसका घर इन्सापन का घर है ।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.११७ ।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.३२४ ।

मैं उसके घर की रखवाली करता हूं । तुम सब उसके इन्साफ की दौलत के लुटेरे हो । तुम पर भौंकना मेरा फर्ज है, मेरे मालिक का फरमान है । मेरा तुम से अजली बैर है ।`[1] वह सरकारी बाबुओं से इंसाफ चाहता है । परमात्मा का कुत्ता सरकारी कुत्तेपर इसतरह भौंकता है जिससे न्याय का दरवाजा जबरदस्ती खुलवा लेता है । अपना काम होने के पश्चात् लोगों से कहता है, `चूहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होता । भौंको, भौंको, सबके सब भौंको । अपने आप सालों के कान फट जाएँगे ।`[2] यह कहानी राजनीतिक भ्रष्टाचार और नौकरशाही के संकट की कहानी है । देश में संपूर्ण प्रजातांत्रिक व्यवस्था निरीहीकरण के संदर्भ में बँधी हुयी है । प्रजातंत्र जनता के लिए मात्र ढकोसला बन कर रह गया है । कहानी में अमानवीयता के स्तर पर जाकर व्यवस्थागत आधुनिकता स्पष्ट होती है ।

`जख्म` जख्मी आदमी की ही कहानी नहीं है बल्कि उन संपूर्ण लोगों की कहानी है जो मानव नियति की परिणाति और उसकी भयंकर प्रवंचना में साँस ले रहा है । इस में जख्मी व्यक्ती सरकारी व्यवस्था के प्रति असंतुष्ट है । उस पर नाहक आरोप लगाकर `डिपार्टमेन्टल इन्क्वायरी `[3] लगायी जाती है । उसके अंदर व्यवस्था के प्रति आक्रोश एवं क्षोभ का भाव भरा है । आक्रोशमयी व्यंग्य ही `जख्म `का प्रधान स्वर है । कहानी में आधुनिकता व्यवस्था के प्रति सांकेतिकता के स्तरपर व्यक्त होती है ।

`क्लेम` कहानी विभाजन में बरबाद हुए लोगों की कहानी है । लोगों ने दंगा-फसाद में नष्ट हुयी संपत्ति के लिए क्लेम किया है । वे किसी न किसी तरह अपनी लूटी हुई संपत्ति का मुआवजा चाहते है । साधुसिंह तांगेवाले के तांगे में बैठी हुयी तीन सवारियाँ क्लेम दफ्तर जाते समय दफ्तरवालों की कार्यप्रणाली

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. ३२४ ।

२ - वही - पृ. ३२६ ।

३ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ. ४१४ ।

की आलोचना कर रहे हैं । कहानी की स्त्री कहती है ' पता नहीं, मुझे अपने जीते-जी इन कसाइयों का पैसा देखने को मिलेगा या नहीं ?'[१] उन सवारियों में एक बुढ़िया है, जिसे छः हजार का क्लेम मिल चुका है परन्तु उसे शिकायत है कि पैसा कम मिला है । एक अधेड व्यक्ति है जिसे क्लेम में अभी तक कुछ नहीं मिला है और उसके पास आजीविका का कोई साधन भी नहीं है । उसे बुढ़िया के व्यवहार से झुंझलाहट होती है कि वह छः हजार लेकर भी और क्यों कर रही है । तांगे में बैठा बूढ़ा सरदार संतुष्ट है, उसे साठ हजार मिल गए हैं । उसने क्लेम की रकम बढ़ा-चढ़ाकर लिखाई थी । तांगेवाला साधोसिंह भी पाकिस्तान से जान बचाकर भागा है । उसकी पत्नी दंगों में मारी गयी और खूद बड़े चाव से अपने घर के आंगन में लगाया हुआ पेड़ पीछे छोड़ आया है । साधोसिंह किस चीज का क्लेम भरे ? क्या मृत पत्नी का या पेड़ का । वह यहाँ आर्थिक कठनाई में दिन काट रहा है । उसका जिम्मेदार कौन ? इस अफसरशाही में भौतिक पदार्थों की क्लेम मिल गयी हो, परंतु क्या भावनाओं के कुचले जाने का कोई मूल्य है ? क्या प्रेमियों के दिल टूटने और उनके परिवारों के टूटने बिखरने का भी कोई क्लेम किसी दफ्तर में भरा जा सकता है ? साधोसिंह का क्लेम जानवर (घोडे) से है जो उसके जान को खैर मानता है । ' तेरी बरकत रही अफसरा, तो अपने पुराने दिन फिर आएँगे । खा ले, अच्छी तरह पेट भर ले । अपने सब क्लेम तुझी को पूरे करने हैं, तेरी जान की खैर .... ।'[२] राजनीतिक व्यवस्था से संत्रस्त लोगों की स्थिति को लेकर आधुनिकता व्यंग्यात्मक स्तर पर जाकर कहानी में अभिव्यक्त हुई है ।

देश विभाजन को पृष्ठभूमि बनाकर लिखी गई कहानियों में मोहन राकेश ने विभाजन की कटुता एवं क्रूरता को ही रेखांकित नहीं किया बल्कि उस आग के दरिया से पार उतर आनेवालों के दिल के छालों को भी देखा है ।

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.१०९ ।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.११२,११३ ।

(३) संत्रास में मानवीयता की चिन्गारी ---

'मलबे का मालिक' कहानी में बँटवारे के संदर्भो को अत्यंत मार्मिकता से उठाया गया है और विसंगतियों के बीच उलझी मानवीयता के सवाल को संवेदित कर दिया है। कहानी केवल चिराग, जुबैदा, किश्वर की ही नहीं वह तो विभाजन के मलबे पर उन तमाम नव युवती-युवकों और बुजुर्गों की है जो विभाजन के नाम पर टुकड़े-टुकड़े कर दिये है। जिन्हें बेइज्जत होते और कत्ल होते पास-पड़ोसियों ने बंद खिड़कियों के भीतर से देखा था, 'बन्द किवाडों में उन्हें देर तक जुबैदा, किश्वर और सुल्ताना के चीखने की आवाज सुनाई देती रही। रक्खे पहलवान और साथियों ने उन्हें भी उसी रात पाकिस्तान भेज दिया, मगर दूसरे तवील रास्ते से। उनकी लाशें चिराग के घर में न मिलकर बाद में नहर के पानी में पाई गई।'[१] अत: यह मलबा उन मृत लोगों की लाशोंपर नहीं बना है, यह मलबा सरकारी भी है। उन पीडित लोगो के क्रंदन में यह विभिषिका उभरी है। बूढ़ा गनी जो पाकिस्तान से आकर अपने घर का मलबा देखता है और किसी की वजह से हुआ यह जानते हुए भी रक्खे पहलवान को कहता है 'जब जान पर बन आई, तो रक्खे के रोके भी न रुकी।' और इसी में कटुता नष्ट होकर मानवीयता की शुरुआत होती है। इसी में आधुनिकता प्रकट होती है। मलबे पर गुर्रानेवाले कुत्ते और रक्खे पहलवान में कोई अंतर नहीं प्रतीत होता। इतने पर भी चूँकि वह स्वातंत्र्योत्तर दशक भारतीय - इतिहास के नये निर्माण-क्रम में आशाओं और आकांक्षाओं का दशक था। अत: कहानी का अंत होते होते ऐसा लगता है कि भारत और पाकिस्तान विभाजन से मनुष्य तो मरा किंतु मनुष्यता अब भी जीवित है।

(४) सार्वजनिक रुप से व्यक्ति सुरक्षा खत्म --

सार्वजनिक रुप से व्यक्ति की सुरक्षा समाप्त होती जा रही है। वह संत्रस्त और अरक्षित जिंदगी बिताने के लिए मजबूर है। 'एक ठहरा हुआ चाकू'

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ. २२७।

इस कहानी में देश में पनपती अराजकता और हिंसक शक्तियों के आतंक के नीचे सिकुड़ते जाते सामान्यों की समस्या विकट है । कहानी नायक बासी रोमांस की उमंगों भरी राह में अनचाहे गुण्डा नत्थेसिंह से भिड़ जाता है और उस गुण्डे के खिलाफ पुलिस में रिपोर्ट दर्ज करता है । इस संदर्भ में अधिकारी, न्याय, कानून, सुरक्षा, समाज आदि सबके चेहरों का लेखक ने पर्दाफाश कर दिया है । यह कहानी व्यक्ति-व्यक्ति के बीच उत्पन्न अमानवीयता की कहानी है । आज गुण्डा गर्दी तो एक आम बात हो गयी है । दिन-दहाड़े सड़कपर आदमीपर वार होता है । लेकिन 'खुले चाकू की चमक से उसकी जबान और छाती सहसा जकड़ गई '[१] है । पुलिस बासी को उस गुण्डे की शिनाख्त के लिए पेश करते हैं । पर वह हिचकिचाता है कि कहे वही यह गुण्डा है । कहानी के अंत में जड़ता के प्रति विद्रोह की प्रामाणिकता मिलती है । जब थानेदार उस आदमी को पहचानने के लिए कहता है तब मन की उद्विग्नता में कह देता है कि 'हाँ, वही आदमी है यह ।'[२] परंतु सामाजिक रूप में व्यक्ति सुरक्षा खत्म हो गयी है इसलिए उसके 'पैर में खुजली बहुत बढ़ गई थी । उँगलियां काँप रही हैं और सारा अस्तित्व उखड़ पुखड़ रहा है । इस तरह सांकेतिकता कहानी में स्वाभाविकता ला देती है । कहानी में अमानवीयता के कुहरे में आधुनिकता उभरती है ।

-- निष्कर्ष ----

मोहन राकेश जी की अधिकांश कहानियों का मूल्यांकन यहाँ आधुनिकता के परिप्रेक्ष्य में किया गया है । राकेश जी की कहानियों आधुनिकता सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक संदर्भों में देखी गयी है । सामाजिकता के

---

१ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ - पृ.१४३ ।

२ मोहन राकेश की संपूर्ण कहानियाँ पृ.१५० ।

संदर्भ में सम्बन्ध हीनता, बेगानापन, व्यर्थता, महानगरीय परिवेश, अनिर्णय का दर्द, अपरिचय बनाम परिचय, अलगाव एवं औपचारिकता, आत्मनिर्वासन, अनिर्णय की उदासीनता, नारी: एक असफल, आधुनिका, बिलगाव, अमर्यादित भोग एवं मुक्त समाज में आधुनिकता को विश्लेषित किया गया है। धार्मिकता के संदर्भ में धर्माडम्बर, आस्था हीनता, मानवीयता एवं नये मूल्यों की खोज में आधुनिकता देखी गयी है। आर्थिकता के संदर्भ में आर्थिक विवशता एवं जिंदगी का दुहरापन, अर्थ का अभाव तथा संकट, अर्थ से उत्पन्न घुटन और छटपटाहट, अर्थ के कारण उत्पन्न जिंदगी का संघर्ष, आर्थिक विवशता में नारीत्व नष्ट में आधुनिकता देखी गयी है। राजनीतिकता के संदर्भ में मालिक-मजदुर संघर्ष-राजनैतिक व्यवस्था, नौकरशाही की अमानवीयता, संत्रास में मानवीयता की चित्कार, सार्वजनिक रूप से व्यक्ति सुरक्षा खत्म के अन्तर्गत आधुनिकता को परखा गया है। राकेश जी की आधुनिकता अपने आसपास की जिंदगी को लेकर चलती है।

इससे यह स्पष्ट है कि राकेश जी ने आधुनिक मनुष्य के जीवन को सभी अंगों से देखा है और उसका सूक्ष्म तथा यथार्थ विश्लेषण करने में उन्हें पूरी सफलता मिली है।

••